❀ श्री श्री गौरहरिर्जयति ❀

श्री श्री किशोरीदासजी की

वाणी

संवत् २०१७
मार्गशीर्ष कृष्णा चतुर्दशी
न्यौछावर ॥=)

प्रकाशकः—
कृष्णदास बाबाजी
(कुसुमसरोवर वाले)
मथुरा।

समर्पणपत्रम्

भज—निताइ गौर राधेश्याम ।
जप—हरे कृष्ण हरे राम ॥

महामहिम, प्रेमविगलितहृदय, संकीर्तन प्रचारक,
गौरगतप्राण, गुरुदेव बाबाजी महाराज
(१०८ श्रीश्रीरामदासबाबाजी) के
नित्यधामगमनकी शुभतिथि में
यह ब्रजभाषा का वाणी ग्रन्थ
प्रस्तुत होकर उन्हीं के
पुनीतस्मरण में
सर्मापत हैं ।

—कृष्णदास

* भूमिका *

प्रस्तुत वाणी के रचयिता महात्मा श्री किशोरीदासजी गौड़ीय सम्प्रदाय के थे। व्रजभाषा के वाणीकारों में किशोरीदास नाम के कई महात्मा हुए हैं जिनमें तीन की रचनायें उपलब्ध हैं। राधावल्लभ सम्प्रदाय में भी किशोरीदास जी नाम के एक महात्मा हुए जिन्होंने श्रीपाद रूप गोस्वामी कृत श्रीराधाकृष्ण-गणोद्देश दीपिका का आधार लेकर राधाकृष्ण वंसावली क रचना की है। इसी सम्प्रदाय के प्रसिद्ध आचार्य श्रीहितरूपलाल जी ने उसी कृष्णवंशावली में भी गणोद्देश दीपिका का नामोल्लेख किया है।

❀ श्रीराधावल्लभो विजयते ❀

वरन्यौं चाहत कछुक अब कृष्णबंश परिवार।
देहु बुद्धि मति शुद्ध अति श्री हरिवंश उदार॥
गणोद्देश जु दीपिका मध्य कही कछु रीति।
जै श्रीरूपलाल हित सो लिखत सुनहु रसिक दै प्रीति॥ १ ॥
श्रीगुरु श्रीगोविन्द पद मंगल हित करौं ध्यान।
मंगल श्री व्रजराजघर ज्यों पाऊँ सनमान॥
विघन हरन मंगल करन जे कहियति हैं और।
तिन हूं चरनन कौं नवौं पूजौ आसा मोर॥ २ ॥
श्री रूप सनातन जीव जुत कीनौ भक्ति प्रकास।
जनम जनम निज चरन कौं कीजै मोकौं दास॥ ३ ॥
श्रीहरिवंशच्चंद वर सुमिरि कैं मन में कियो विचार।
अपनो मति अनुमान कछु वरनौं व्रजरससार॥ ११ ॥
श्रीगुरु गोविन्द चरन रज वंदौं। मंगल रूप ध्यान आनन्दौं॥१७॥

पाऊँ श्रीहरिवंश सहाय। वरनौ कछु परिकर व्रजराय ॥ १८ ॥
परम हंस श्रीरूप जू परम कृपा मनधार।"
वरन्यौ परिकर घोषपति जो व्रजराज कुँवार ॥ २२ ॥
सोई भाषा करि कहौं लहौं कृपा इन पास।
श्रीहरिवंश प्रताप तैं कहत किशोरीदास ॥ २४ ॥
नंदराय वृषभानहि भावै। किशोरीदास दिन मंगल गावै ॥ ६६ ॥
॥ इति वंशावली ॥ संवत् सत्तर सतानुया मास पोस सुदि बीज को लिख्यौ सुन्दर ग्रन्थ बनाय।

विभिन्न स्थलों से उद्धरित उपरोक्त कविद्वय की रचना से स्वतः सिद्ध हो जाता है कि इनका आधार गणोद्देश दीपिका है।

इन दो कविद्वय के अतिरिक्त प्रस्तुत वाणीकर्ता ने भी उसी आधार पर एक वंशावली लिखी जो कि इस संग्रह के परिशिष्ट में संलग्न है। इस वंशावली का अन्य कई प्राचीन प्रतियों में उल्लेख आता है, जिससे निश्चय होता है कि श्रीराधाकृष्ण गणोद्देश दीपिका का प्रभाव अनेक परिवर्ती वाणीकारों के ऊपर पड़ा था। श्री गोवर्द्धनभट्टजी (छुट्टनभट्ट जी) अठखम्भा वृन्दावन के पुस्तकालय में प्राचीन हस्तलिखित एक संग्रह उपलब्ध है जो लगभग २५० वर्ष से अधिक होगा यह सम्पूर्ण सामिग्री इसी लिपि से अवतरित है।

जीवनी—

इनके जीवन के विषय में विशेष ज्ञात नहीं है। ग्वालियर और धौलपुर के बीच सौपुर नामक राज्य है। यह वहीं के राजा थे। वरषाने की श्रीजी मुसलमानों के उपद्रव के समय वहाँ पर कुछ दिन रहीं थीं। इतिहास के ज्ञाताओं से यह बात छिपी नहीं है कि औरंगजेब के समय में वृन्दावन के अनेक ठाकुर गोविन्द, गोपीनाथ मदनमोहन आदि की भी प्रतिमायें रियासतों में चली गई थीं। जिससे इनको कोई क्षति न होने पाये। एक बार यह

व्रज यात्रा करने आये। पुनः यह लौटकर अपने राज्य को नहीं गये और जीवन का सम्पूर्ण भाग वरषाने में रह कर विताया। वरषाने में आज तक सौपुर वाली कुञ्ज मौजूद है।

श्री किशोरीदास जी की गौरचरणारविन्द में पूर्ण निष्ठा थी। वाणी के प्रारम्भ में अपने उपास्य प्रेमावतार श्री चैतन्य देव की महिमा का वर्णन अनेक पदों में किया है।

भक्तकवियों ने भगवान के नाम, रूप, लीला, धाम का वर्णन अपनी कविताओं में किया है। अपनी अपनी भावनाओं को कविता का रूप देकर उसे गोविन्द के सन्मुख अर्पण कर देना ही इनकी नित्य दिनचर्या थी। इसी उद्देश्य से महात्माओं का समुदाय भी समय समय पर एकत्रित हुआ करता था। कालान्तर में इसी का नाम समाज पड़ गया। प्रस्तुत संग्रह में जो पद लिखे गये हैं उनकी रचना इसी विचार से की है अतएव इस में मन्दिर देवालयों में होने वाले विभिन्न उत्सवों में कीर्तन करने के पदों का संग्रह है। श्रावण, कार्तिक एवं फाल्गुन मास में उत्सव अधिक आते हैं इसीलिये इनसे सम्बन्धित पद अधिक हैं। पदों की भाष व्रजभाषा है। विभिन्न राग रागनियों में बांधकर उसे अत्यन्त सरलता के साथ प्रस्तुत किया है। इसके पद इतने मनोहर हैं कि जब मैंने इसकी पांडुलिपि देखी तो होली का एक पद आगामी मास से प्रकाशित होने वाली [व्रजमाधुरी] नामक मासिक पत्रिका में रक्खा और उसी भावना का एक चित्र भी बनवाया। इस पुस्तक के अन्त में जयपुर नरेश श्रीगोविन्दजी के सेवक, श्री सवाई प्रतापसिंह जी (व्रजनिधि) रचित सनेह संग्राम भी संकलित है।

बाबा कृष्णदास जी ने अपने अथक परिश्रम से इन पदों का संग्रह किया है। और प्रस्तुत संस्करण के पदों का संग्रह बाबा वंशीदास जी, श्रीराधाचरण जी गोस्वामी विद्यावगीश एवं श्री छुट्टनभट्टजी के पुस्तकालय की प्राचीन प्रतियों से किया गया है।

वरषाने के श्रीजी के मन्दिर में एक विस्तृत पद संग्रह है उसमें किशोरी दास जी के बहुत पद प्राप्त हैं। श्रीजी के मन्दिर में नन्दगांव के नन्दबाबा जी के मन्दिर में तथा श्री गोवर्द्धन भट्ट जी वृन्दावन के यहां होली भूलन आदि उत्सवों में किशोरीदासजी के पदों का गायन बड़े चाव से होता है। किशोरीदासजी के होली एवं धमार के पद भी अति सुहावन एवं प्रसिद्ध हैं।

अन्त में यही कहना है कि प्रस्तुत संग्रह गोड़ीय सम्प्रदाय के व्रजभाषा साहित्य की एक और कड़ी है। अत्यन्त प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकों से इसकी पाँडुलिपि तैयार की गई है। अतः यत्र तत्र अनेक अशुद्धियाँ रह गई होंगी। विद्वान भक्त इसे सम्हाल कर पढ़ लेंगे। प्रकाशित करने का एकमात्र उद्देश्य यही है कि ग्रन्थ-रचना अस्तित्व में बनी रहे। सहृदय हृदय गुण पक्षपाती होते हैं। अलं पल्लवितेन।

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः॥

सुहृदकिंकर
देवकीनन्दन गोस्वामी

विहार पंचमी
श्रीराधामाधव मन्दिर
श्रीधाम वृन्दावन।

❀ श्रीश्रीगौरांगविधुर्जयति ❀

❀ श्रीकिशोरीदासजू की वानी लिख्यते ❀

✱ अथ श्रीमहाप्रभुजू के पद मंगलाचरण लिख्यते ✱

राग सूहो विलावल रूपक ताल—

जै जै श्री चैतन्य मंगलनिधि गाइयै।
सच्चिदानन्द स्वरूप रसिक सुखदाइयै ॥ १ ॥
प्रेम अवधि ललित लीला अधिकाइयै।
ऐसे गौर किशोर सदा उर ध्याइयै ॥ २ ॥
(चाल) ध्याइयै गौरांग सुन्दर निरखि नैंन सिराइयै।
भज शचीनन्दन जगतवंदन त्रिविधि ताप नसाइयै॥३॥
पतित पावन विरद जाकौ बड़े भागनि पाइयै।
किशोरीदास मंगलनिधि जै जै श्रीचैतन्य गाइयै ॥४॥

जय जय श्री चैतन्य परम कृपाल।
प्रगटे जौव उधारन भक्तन के प्रतिपाल ॥१॥
दुखित जाँनि जन जनम लेत तिहि काल।
भक्ति मंडन खल खंडन ऐसे दीनदयाल ॥२॥
(चाल) ऐसे दीनदयाल प्रभु ह्वै जगन्नाथ के लाल।
कृष्ण भक्ति प्रकासि दसौ दिसि कीनौं विश्व निहाल ॥३॥
प्रेम तैं नेंम कियो न्यारो जैसे छीर नीर मराल।
किशोरीदास की जीवनि जै जै श्री चैतन्य कृपाल ॥४॥

जै जै श्री चैतन्य मनोहर नाम।
नैंक उचारत होत है पूरन काम ॥ १ ॥

येही अनन्य गति रसिकनि कौ विश्राम ।
सकल मंत्र कौ सार परम सुख धाम ।। २ ।।
(चाल) सुख धाम शीतल कलप तरुवर मेटत माया घांम ।
अभिराम अतिरसना रटत हैं जे नर आठौं याम ।। ३ ।।
वसत ताकें उर निरंतर रीझि स्यामा स्याम ।
किशोरीदास सुदृष्ट जै जै श्रीचैतन्य मनोहर नाम ।। ४ ।।
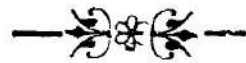
जय श्री चैतन्य वेद वचन प्रति पाल्यौं ।
सतजुग ह्वै नरसिंह हिरन्यकशिपु उर फार्यौं ।। १ ।।
त्रेता राम स्वरूप ह्वै रावण कुल ही संहार्यौं ।
द्वापर वृज में लीला करि गोवर्द्धन कर धार्यो ।। २ ।।
(चाल) धार्यौ वाम भुजा गिरिनायक सुरपति पाइन पार्यौं
कलिजुग में श्री शची सुवन ह्वै मायावाद निवार्यो ।। ३ ।।
सुर नर मुनि सब खोजत जाकौ गावत निगम पुकार्यौं ।
किशोरीदासनि हित जय श्रीचैतन्य वेद वचन प्रतिपाल्यौं ।।४।।

जै जै श्री कृष्णचैतन्य ह्वै अवतरे ।
प्रिया अंग लखि गौर वरन निजु वपु धरे ।। १ ।।
भक्ति रसासव पान करत सब मुद भरे ।
भक्त रूप ह्वै प्रेम पयोनिधि विस्तरे ।। २ ।।
(चाल) बिस्तरे प्रेम पयोधि अंग अंग पुलक गद गद रस ढ़रे ।
नैन नीर प्रवाह अद्भुत चलत मानौं पिचकरे ।। ३ ।।
रूप सनातन जीव आदिक शरन दै निजु सम करे ।
किशोरीदास अनन्य गति श्रीकृष्णचैतन्य ह्वै अवतरे ।।४।।

जै श्री चैतन्य परम सुख रास ।
व्रज बृन्दाबन रूप कीनां प्रगट प्रकास ।। १ ।।
भक्त जनन के वृन्द में पावै अधिक हुलास ।
रोंम रोंम प्रति राधाकृष्ण भजन अनयास ।। २ ।।

(चाल) कृष्ण भजन अनयास जिन कैं वृथा न खोवैं स्वास ।
ह्वै कैं उनमत्त कुंजनि विचरत निरखत रास विलास ॥३॥
धन्य जन जे शरन आवै रहैं निरंतर पास ।
किशोरीदास यहैं लीला गावैं पावैं वृन्दाबन बास ॥ ४ ॥

राग जैत कल्यान रूपक०

कैसें कलि के जीव ये तरते ।
जो श्री शचीनंदन या भूपर निजु अवतार न धरते ॥
राधाकृष्ण नाम संकीर्त्तन विन यमगन क्यों डरते ।
किशोरीदास ब्रजचंद प्यारी की रूप माधुरी कौन हीयमें धरते ॥

राग विहागरौ—

नित्यानन्द कृष्ण चैतन्य सदा सनातन रूप ।
अद्वैत गोपाल जीव रघुनाथ बृन्दाबन के मधूप ॥
लीला अवतार भये नन्द नन्दन अब ह्वै भक्त अवतार अनूप ।
किशोरीदास निज शरण दैं जनकौं काढें भवते बूड़त है कलिकूप॥

राग षट—

जय शचीनन्दन, जय जगवन्दन, त्रिभुवन पाप ताप दुख हरनं ।
जय आनन्दनिधि, जय मंगलनिधि जय सुखसागर सब सुख करनं॥
जय चैतन्य जय गौर मनोहर, प्रेम भक्ति भक्तन उर धरनं ।
जय ब्रजचन्द्र ब्रजचन्द्र उपासी जय जय किशोरीदास निज शरनं॥

राग कन्हरो—

हरे हरे प्रचुरन जग के ऊपर प्रभु विश्वम्भर लियो अवतार ।
पतित उधारन, भक्ति प्रतिपारन, दूरिकरन सब कलि कौ भार॥
चारि वीस अवतार तैं यह लीला अगम अपार ।
नन्द घर श्रीकृष्ण प्रगट भये, अब भये गौरांग शची कुमार ॥
दूरि जात दुख द्वंद शरनतैं और गिटैं यम द्वार ।
किशोरीदास चैतन्य चन्द्र जू निरधार आधार ॥

राग अडानो—

जै जै श्री चैतन्य कृपाल ।
परम दयाल प्रगटे निज जनन हित जानि घोर कलिकाल ॥
कैई पतित उधारी दशो दिसि कृष्ण भक्ति को कियो प्रकास ।
राधा ध्यान निरन्तर जिनकै युगल भजन अनयास ॥
महा अगम सो सुगम दिखायो व्रज वृन्दाबन रूप ।
परम रहसि लीला सुख दाई कीनी उदित अनूप ॥
नन्द जसोदा के ह्वै लाला श्री व्रजचन्द कहांए ।
किशोरीदास पुनि शची सुवन ह्वै भक्ति निसान बजाए ॥

राग केदार, ताल जात्रा—

श्रीचैतन्य पद पंकज भजोरे ।
योग यज्ञ जप तप जितो तीरथ करम कठिन सब ही परिहरोरे ॥
कठिन कलिकालमैं शरण गहि कै अबै भव दुखसागर सबैहीतरोरे
किशोरीदास महाप्रभु भजि व्रज बृन्दाबन सब ही सुख लहोरे ॥

राम कली—

श्री चैतन्य महाप्रभु गाइये ।
जो तू चाहैं वृन्दाबन कौं गौचारन चित लाइये ॥
सुमिरत ही श्रीशचीनन्दन कौं करम फंद छुटि जाइये ।
किशोरीदास इक शरण तिहारी निश्चै शरन रखाइये ॥

राग भैरू—

सुमिरन करौ श्रीशचीनन्दन कौं ।
नाम लेत ही आनंद उपजै, सुख कारी और दुख कदनकौं ॥
भजनानन्द को मोद बढे तनु मिटैं कलेश कलि के फंदन कौं ।
किशोरीदास श्रीगौर कृपा तैं शरन लियो श्री व्रजचन्दन कौं ॥

राग रामकली—

नित्यानन्द प्रभु चैतन्य गाइयै ।
अद्वैत आचार्य्य गौर भक्त वृंद मन भाइयै ॥

मदनगोपाल गोपीनाथ गोविन्द चित गाइयै ।
वंकविहारी गिरवरधारी श्यामसुन्दर उर ध्याइयै ॥
राधावल्लभ कुंजरमन मुरलीधर सुख दाइयै ।
दासी बृन्दाबन व्रजचन्द्र विहारी पै किशोरीदास बलि जाइयै ॥

राग काफी—

भजि भजिरे श्रीराधागोविन्द मदनमोहन गोपीनाथ पियारे ।
नित्यानन्द कृष्ण चैतन्य अद्वैत रूपसनातन रूप उज्यारे ॥
जीव रघुनाथ गोपाल बृन्दाबन गौर भक्त रस सिन्धु सदारे ।
श्रीव्रजचन्द्र किशोरी प्यारी जुत नित प्रति सदा रहौ हृदै हमारे॥

❀ अथ श्रीमहाप्रभु जू बधाई के पद लिख्यते ❀

राग आसावरी रूपक—

बाजत रंग बधाई माई लागत परम सुहाई ।
जनमें हैं चैतन्यचन्द जू रसिकनि के सुखदाई ॥
गावत मंगल जुरि मिलि नारी श्रीशची मल्हावैं ।
द्वारैं वन्दन माल सँथिया मोतियन चौंक पुरावैं ॥
ठांय ठांय सोभित कलस दीपावलि अमरन को मन मोहें ।
सोभा श्री जगन्नाथ के घर की बरनैं सोक विको हैं ॥
कलि के जीव उद्धार करन हित रसनिधि श्रीव्रजचन्द्र ।
किशोरीदास पुनि महाप्रभु ह्वै प्रघटे आनन्द कन्द ॥

राग टोडी—

बाजत रंग बधाई घर घर ।
आनन्द निधि सुखनिधि सोभानिधि जनमे सची कुवरवर ॥
पठत वेद मुनि गावत नारी मंगल द्वारें संथिया घर घर ।
बाजत ध्वज वर बंदनमाला मोतियन चौक पूरत घर घर ॥
देववधू कुसुमावलि वरषत हरषत दुंदुभी बाजत सुरपुर ।
किशोरीदास श्रीमहाप्रभु प्रगटे प्रघट कृष्ण अवतार मनोहर ॥

राग भैरो—

देह धरे न लहो बृंदाबन ।

महामूढ़ अज्ञान नारकी योंही वृथा खोयो अपनो तन ॥
आवागमन रहत ता नर कौं त्रिविधि ताप करि ग्रसत सदा मन।
विपिन कृपा विन दास किशोरी कहा पावैं व्रजचंद शरन कन ॥

राग रामकली-रूपक—

दीजै वृंदाबन कौ वास ।
राधाकृष्ण गुन गाऊं छिन छिन वृथा न खोऊं स्वास ।
निरखत रहौं कुंज तरु साखैं अरु पुनि रास विलास ।
करौं स्नान श्री जमुना जू मैं व्रजरज मांहि निवास ॥
श्रीभागौत सूनों नित श्रवननि संत सीत लैं करौं हुलास ।
श्रीव्रजचंद्र विहारी सौं विनती करत किशोरीदास ॥

राग भैरो—

श्री जमुना मन वसौ निरंतर ।
ज़ाके दरस परस अघनासत उपजत रति राधामोहन वर ॥
रासबिलास बास वृन्दाबन प्रापति होत जिहि कृपा तैं ततपर ।
स्यामसुन्दर अरु स्यामा प्यारी तिहिं अनुग्रह ते वसैं उरअंतर ॥
श्रीव्रजचन्द्र लाडिली विहरत सखी यूथ निसिदिन ता तट पर ।
रमा आदि देव दुर्लभ सुख तिहि प्रसाद निरखै किशोरी नैन भर॥

राग धनाश्री ति०—

श्रीराधेकृष्ण राधेकृष्ण कृष्ण राधे सर्वोपरि हैं नाम ।
हरेकृष्ण हरेकृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे हरे राम हरे राम राम ॥
श्रीव्रजचंद्र लाडिली जमुना वृंदावन निजु धाम ।
किशोरीदास सरनागत ते सुधरैं सगरैं काम ॥

मारू—

श्रीभागवत अमृत रस पीजै बारंबार सदाई ।
मोक्ष भये हूं निगम तरु फल यह छांडियै नाहि कदाई ॥
श्रीशुक आप कृतारथ रूपी नैंकु न चाह छुडाई ।
आपु पियो अरु प्याय परीछित सात दिवस लगताई ॥
कृपा करी रसिक भक्तन पर अद्भुत जुगत दिखाई ।

श्रीव्रजचंद किशोरी यह मागत निसि दिन रहैं मेरे उर छाई ॥

राग कानरौ—

अरे यह महा कठिन कलिकाल ।
मित्र बंधु कलत्र सूझत ये सब माया जाल ॥
या मैं उरझि जात नर दुर्गति हैं जग नर्क निकेत ।
तातै तजि वसि वेगि बृन्दाबन रे मूरख मन चेत ।
सव तीरथ व्रत नेम तें सर्वोपरि वनराज ।
जहाँ श्री व्रजचंद किशोरी करै निरंतर राज ॥

राग केदारो—

मेरे सर्वसु धन श्रीराधा ।
काहू के काहू की आसा मेरै राधा आस अगाधा ॥
इष्ट अभीष्ट राधा ही मेरैं निरखि होत सुख साधा ।
किशोरीदास नाम राधा कौ दूरि करत है बाधा ॥

राग विहागरौ—

श्री राधेकृष्ण राधेकृष्ण राधे ।
नंद नंदन वृषभानु नंदिनी हैं गुन रूप अगाधे ॥
नव तरुनी अरु तरुनीवल्लभ सुमरि मिटैं भव वाधे ।
किशोरीदास व्रजचंद्र विहारी प्रेम डोरि सों वांधे ॥

राग टोडी—

सहेली मनमोहन बन्ना वन्यौ आज ।
लटपटी पाग मरगज वागे नैन अरुन रतिराज ॥
पीक कपोलनि भाल महावरि रह्यौं कज्जल अधर विराज ।
किशोरीदास व्रजचंद्र विहारी कोटि मदन सिरताज ॥

राग टोडी—

सहेली मनमोहन बन्नावनि आया ।
केसरि पाग झगा उपरैंना सीस सेंहरा बनाया ॥
एक तैं एक रूप गुन सींवा दांई दार जनैती ज्याया ।
किशोरीदास व्रजचंद विहारी आछी वनि कैं रूप लुभाया ॥

राग मालकोष—

जयति जय राधिके रासविलासनि ।
परत वैनु धुनि श्रवन छबीली होत हियैं रति रंग हुलासनि ॥
आतुर जाय मिलत व्रजचंद्र है, सुंदरि कुंज निवासनि ।
किशोरीदास जहा गुंजत मधुकर बृन्दाविपिन सुवासनि ॥

राग असावरी—

श्रीराधिका नाम श्रवन सुन्यौ है जबतैं आनंद हिये न समाय ।
पुलकित अंग और होत रोमांचित सब अंग प्रेम चुचाय ॥
मिटि जाय जडताई मन की सगरो अद्भुत रसिकाई झलकतआय ।
किशोरीदास नाम सुनत होत ऐसी गति देखिवेकी छबिकैसेंकहीजाय

राग ललित—

अब तौं दरस दीजिये प्यारे ।
श्रीराधा व्रजचंद्र विहारी सुंदर रूप उज्यारे ॥
गौरस्याम माधुरी निसिदिन निरखौं नैंन हमारे ।
किशोरीदास लखि नैंन सिराऊं दंपति छबि मतवारे ॥

अथ लालजू की वधाई—

राग मारू

हौं ब्रजवासिन को मंगा ।
वल्लभराज गोकुल कुल मंडन इन ही घर कौ जगा ॥
नंदराय इक दियो पिछोरा तामें कंचन तगा ।
श्रीबृषभान दियो इक चौर कंचन जटित नगा ॥
कीरति दई कुवरि की झगुली जसुमति अपने सुत कौ झगा ।
श्रीकिशोरीदास कौ पहिरायो नील पीत कौ पगा ॥

~~~~~~

ढाढनि नंदीसुरते आई ।
अपने पति को संग लिये है अति आतुर उठि धाई ॥
उदौ देखि व्रज वल्लभ कुल कौ फूली अंगन माई ।
नाचति नाचति प्रमुदित ह्वै ह्वै दौरि असीस सुनाई ॥
~~~~~~

रतन भान रतनन की पहुची ढाढिनि हाथ गहाई।
उदै भान सीने को चोवर देत बहुव सकुचाई॥
महारानी कीरति आदर दैं भीतर भवन बुलाई।
कंचन मय भूषण पाटंवर नख सिख लौ पहिराई॥
दिये खता धाननि के अगनित ललित भान जु लढाई।
कंज भान अरु अष्ट भान जू गोधन टाठ बताई॥
महाराज वृषभानु बहुत विधि मन की आस पुजाई।
किशोरीदास की वाह पकरि कै बरसाने जु बसाई॥

राग रामकली—

हम तौं श्री चैतन्य उपासी।
आनंद मंगल निधि शचीनंदन सदा सेऊं सुखरासी॥
इनके चरन सरन आवै जे पावै व्रज बंदाबन वासी।
किशोरीदास इन तजि औरैं भजै तैं नर नरक निवासी॥

यदुवंसी जिजमान तिहारो ढाढी आयो हो।
कुंवरि जनम सुनि कै हौं आयो राखि हमारो मान॥
एक बार हौं पहिले आयो दैन बधाई ताकी।
नंदीसुर बृजराज घरनि घर कूँखि सिरानी जाकी॥
अब तौ मेरे मन कौ भायो दोऊ नेग चुकावौ।
नंदरानी की रति दे रानी ढाढिनि को पहरावो॥
वहौत भांति ढाढिन पहराई गोपराय बडदानी।
किशोरीदास कौ निरभय करि कै बृज राख्यो बृजरानी॥

राग सोरठा—

श्री राधे अद्‌भुत नाम सुहायो।
हरि हर विरंचि रटत हैं निरन्तर वेद पुराणन गायो॥
नन्द कौ नन्दन ब्रज कौ चन्द्रमा सुनि कैं याहि लुभायो।
किशोरीदास बृषभानु नंदनी कैं चरण कमल चित लायौ॥

राग गोड मलार

नृतत होड परी घन दामिनि अरु मोहन छवि भारी प्यारी।
उतकौं घन इत घन से मोहन श्री बृजचन्द्र बिहारी ॥
उत दामिन इत प्यारी राधा श्री बृषभानु दुलारी।
उत मेघमाला इत सखियाँ सब मनहु मँन फुलवारी ॥
उत घन गरजनि इत मुरली धुन वाजत रसभरी वरषै सुधारी।
दादुर मोर पपीहा उत उघटत इत सखी उघटत बोले बलिहारी॥
उत सुर धनुष वादर रंग रंग के इत वरन वरन रंग सारी।
किशोरीदास इत अधिक फैल रही प्यारी मुखचंद उज्यारी॥

राग मियां की मलार-धीमा तिताला—

भीजेगी चूनरी मेरी सरस सुरंग रंग प्रथम पहर आई।
जान देहो प्यारे ग्रह नान्ही नान्ही बूंद परें॥
श्याम घटा सखि बीजुरि मांझ निकरि रही पवन पुरवाई
उमड़ि घुमड़ि घन मन्द मन्द घर हरैं॥
देखि खिजहि मैया अब कैसी ह्वै है दइया वहुरि न आनि ह्वै है
याते जिय डर डरै है।
किशोरीदास व्रजचन्द्र विहारी मोहि पीत पट धाम अरु बूंद
वराय बै सघन कदम्ब तहै॥

राग मेघ मलार - जात्रा ताल—

घनघोर घन कों ब्रज पे रिमझिम नान्ही नान्ही बूंद परै।
झमाझम दामिनी कर चहुँ ओर आनन्द मोद वढ़ावत-
नाचत कोकिल कुंजन केलि करै॥
झूमि रहे वादर में सुरधनु और सीतल सुगन्ध मन्द-
पवन झकि झोर द्रुमकुल ततितैं फूल झरैं।
हरित भूमि पर इन्द्र वधु अति ललित लेत चित वितहिं हरै॥
पीव पीब पपीहा जोर पावस ऋतु झींगुर झिंकार
सोर श्री वन्दाबन सुखहि डरैं।
किशोरीदास व्रजचन्द्र विहारी प्यारी निरखि हरखि उर अंक भरैं

राग मेघ मलार - जात्रा ताल—

गिरि गोधन पर दोऊ ठाड़े ललित कदम्ब तरै ।
रस भीजे ब्रजचन्द्र किशोरी घन दामिन से अंक भरै ।।
उधरयो मेह वरषि तिह छिन मोर श्रंग शैलन पर नृत्य करैं ।
किशोरीदास वन द्रुम झोंरन में कोकिल कुहुकति मनहिं हरै ।।

राग मलार—

सावन तीज सुहावनी लागत जुरि मिल गोप दुलारी ।
खेलत मधि बृषभानु दुलारी ।।
ससिवदनी मृग नैनी सुन्दर नख सिख किये
शृंगार छबीली मनहु मैन फुलवारी ।।
जमुना तीर सघन वन्दाबन सरस भूमि सोहत हरियारी ।
प्रिया संग सुख लेत अली ह्वै किसीरीदास ब्रजचन्द्र विहारी ।।

राभ मलार - धोमा तिताला—

सघन धनि वरषति रस वूँदनि ।
रंग महल वरसति पिय प्यारी मगलनिधि आज तू दिन ।।
कहूं कहा उमगनि आनन्द की उर न समात किये मस मुदिन ।
यह व्रजचन्द्र किशोरी को विहार सुनि जरि मरिजैहैं सौतैं मूँदनि।।

सघन अति श्रीवृन्दावन वन राजत ।
जमुना तीर सुखद हरियारो वन सरवोपरि छाजत ।।
कहीये कहा निकाई जाकी ताहि निरखि कैं मनमथ लाजत ।
किशोरीदास व्रजचन्द्र प्यारी जहाँ नित रति पति के सुख साजत।।

उमड़ि घुमड़ि घनथोररी ।
झुमि झुकि आयो वरसनि लागोरी ।।
रसिक सिर नान्ही नान्ही बूँद झमा झिमि करत दामिनी पवन चलत पुरवाई। भीजत मेरी सुरंग चुनरी किशोरीदास व्रजचन्द्र पीत पट औड़न कूँ मोंकू दैं ।।

❀ अथ हिडोरा उत्सव के कीर्त्तन ❀

राग इमन तिताला—

सखी आजरी हिंडोरे झुलें ।
काढ़ि भवन तै रत्न हिडोरो रोप्यौ है जमुना के कूलैं ॥
तापर बैठे पिय प्यारी राजत पहरैं सुरग दुकूलें ।
किशोरीदास व्रजचन्द बिहारी छबि निरखत मन फूलें ॥

राग इमन इकताला—

हिडोरे झुलन के दिन नीके ।
संग सखी ले बृन्दाबन में करि हैं खेल संग पीके ॥
मंद मंद घन वरषत मेहा गावत गीत भाव ते जीके ।
किशोरीदास व्रजचन्द्र छवि निरखे बढत भाव दृढ़ हीके ॥

राग इमन तथा—

रिम झिम बूँदन वरषत मेह झूलैं कुवरि प्यारे संग ।
दमकनि झमकनि में प्रिय प्यारी भीजे सरस सनेह ॥
कबहुँक अंक भरत झुकि भामिनि करि करि कंपन देह ।
किशोरीदास व्रजचन्द्र विहारी के सुख को नाहिन छेह ॥

राग तोड़ी रूपक ताल—

झूलत कुंज विहारी लाल ।
रतन जटित कौ बनो है हिडोला अति ही सुखद विशाल ॥
चहुं ओर ठाड़ी व्रजवनिता गावत गीत परम रसाल ।
किशोरीदास व्रजचन्द्र विहारी छबि निरखि निरखि कै होत निहाल

राग काफी तिताला—

एरी सखी झूलत जुगल किशोर सुन्दर नवल हिडोरना ।
संग गोरियाँ रतन जटित जराय खम्भ बने चित चोरना ॥
उपर बनी है मयाद लटकत मरुवे मोरना ।
डाड़ी चारि सुदेस गहिरै रंगन वोरना ॥
पटुली विचित्र वनी छवि की नाहिन बौरना ।
बनि बैठे पिय प्यारी सोभा सिन्धु झकोरना ॥

नीलाम्बर पट पीत घन दामिन दुति जोरना ।
निज सांवन की तीज झुलवत थोरे थोरना ।
गहरे जोटा देत रमिक झमकि झकि झोरना ॥
कोहु इकटकहि निहार रीझ त्रण तोरना ।
अतर अरगजा घोरे कोऊ सोधें सौं बोरना ॥
कोउ छबि रहत निहार जैसे चन्द्र चकोरना ।
वीन लियै सब गावें कोऊ जील कोऊ घोरना ॥
यहि विधि करत विलास नहीं जानत निसि भोरना ।
किशोरीदास व्रजचन्द्र विहारी प्रीत निबाहत वोरना ॥

राग काफी - तिवाला—

आज झूलत लड़ेती झुलावत ललित त्रिभंगी ।
सहज श्रृंगार केशरी अंगियाँ साड़ी वनी पचरंगी ॥
चहु ओर गोपी मधुरे सुर गावत तान तरंगी ।
श्री व्रजचन्द्र किशोरीजू की वानिक नव नव रंगी ॥

राग पूर्वी इकताला—

हिडोरे झूलें झूले राधे कुवर ब्रजचन्द्र ।
उमड़ि घुमड़ि औह्लरि आयौ वरषत है मन्द मन्द ॥
ललिता विशाखा देत जोटका गावत अलि गीत छन्द ।
किशोरीदास निरखत यह शोभा छिन छिन परमानन्द ॥

राग गौरी जात्रा ताल—

आजु व्रजराज कों कुवर झूलत वने बनी संग अति राधिका नागरी
चहूं ओर राजत व्रज सुन्दरी एकते एक गुनरुप की आगरी ॥
मधुर मधुर रस भरी देत हैं जोटका गावत गीत भरे अनुरागरी।
श्रीव्रजचन्द्र लाड़िली छवि पर किशोरीदास बलि जायवड़भागरी ॥

राग विहागरो रूपक ताल—

दोऊ मिल झूलत सुरंग हिडोरै ।
जमुना तीर कदम्ब की छईयाँ आवत सुगंध झकोरैं ॥
झूलत झूलत आलस उपज्यों चले कुंज की ओरैं ।

करि व्यारू परिजंक हिंढोरें पौड़े रसिकन मौरें ।
सखि ललितादिक पाँय पलोटति चम्पक बीजना डोरें ।
किशोरीदास व्रजचन्द्र विहारी प्यारी पै डारत हैं त्रन तौरें ॥

राग केदारो तिताला—

झूलै मेरी राधा लाड गहेली ।
सुरंग हिंडोला पर द्रुमबेली झूमि रही अलिबेली ॥
फूलन के भूषन अंग राजत वेनी गुही है चमेली ।
किशोरीदास व्रजचन्द्र झूलत वनि ह्वै संग श्याम सहेली ॥

राग मारू जलद तिताला

झूलत कदम्ब छइयाँ ।
धीरे धीरे जमुना तीर पिय प्यारी पटुली पर बैठे दोऊ गरबहियाँ॥
उरके बार हार सुरजावत अरस परस चित चहियाँ ।
किशोरीदास व्रजचन्द्र प्यारी छवि देवे कू पटतर नहियाँ ॥

राग खमाच तिताला—

राधा प्यारी जू की झूलन रंग करै ।
रमकनि झमकनि चलनि हिंडोरें की लेत है मन हि हरै ॥
छूट छूट फहरत उर अंचल कवरी तो कुसुम झरैं ।
झूलत हैं व्रजचन्द्र किशोरी सो छवि दृगतैं न टरै ॥

अथ हिंडोरा के दोहा—

फूल फूल द्रुम झुकि रहे मधुप करत गुंजार ।
बोलत कोयल रस भरी ललित कदम्ब की डार ॥१॥
झूमि झूमि वादर रहे विच चपला दरसाय ।
हरित भूमि ओढन मनो चूनी जटित जड़ाय ॥२॥
रंग भरी छवि भरी सहचरी पहरे रंग रंग चीर ।
गावत मृदु कल कंठ लखि छूटत मनमथ धीर ॥३॥
चटकीलो रतनन जटित रचि पचि रच्यौं हिंडोर ।
झूलत प्यारी राधिका झुलवत नन्द किशोर ४॥

झूलन प्यारी की सरस वरनत वनै न वैन ।
नैना के बैना नहीं नहीं बैन के नैन ॥५॥

राग सोहनी तथा—

झूलैं श्री ब्रजचन्द्र छबीली संग रंग हिडोरैं ।
चौंपनि रमक लपटि ऊर लागत तव अति बढत हिडोरैं ॥
झरत कुसुम वैनी सै खुलि खुलि नील पीत पट फहरत छोरें ।
सो झूलन छिन छिन प्रति झूलत किशोरीदास मन मौरें ॥

राग सोहनी तथा—

खेलैं तीज रंगीली जुर मिल गोप कुमारी ।
तिनमें मधि नायक श्रीराधा अद्‌भुत सुकमारी ॥
एक दांई साथनि मिल साजे नख सिख भूषन सूही तन सारी ।
अगियाँ पर बूटा जर तारी लहगाँ सोहत किनारी ॥
जमुना तीर सघन वृन्दाबन सरस भूमि सोभित हरिप्यारी ।
उमडि घुमडि घन गरजत मंद मंद दमकि जात चपलारी ॥
तिहि छिनि खेलि तीज झूलै चढि द्वै द्वै द्वै सखि न्यारी न्यारी ।
किशोरीदास भामिन ह्वै प्यारी संग झूलैं ब्रजचन्द्र विहारी ॥

राग ऐंराख आडताल—

हिडोरे हेली झूलत राजकुमारि । भुलावत प्यारो री व्रजचन्द्र ।
मृदुकल कराड दूँति सुर लै लै गावत हैं व्रजनारी ॥
झूमें घन कुसुमित वन फूलित हरित भूमि फुलवारी ।
किशोरीदास झूलन भुलवन ये वेर बेर वलिहारी ॥

राग मलार तिताला—

नीकी ऋतु आई रे ।
उमड़ि घुमड़ि वरखत वादल नान्हीं नान्हीं बूँद सुहाई रे ॥
झूलत सघन कुंज की छैयाँ राधे कुमरि कन्हाई रे ।
जोटा देत सखी ललितादिक रमकि झमकि अधिकाई रे ॥
दमिकनि दामिन चमकित प्यारी प्रीतम उर लपटाई रे ।
किशोरीदास व्रजचन्द छवि निरखें मनमथ रहो लुभाई रे ॥

राग सोरठा जलद तिताला—

राधाप्यारी जू की भूलन आजु बनी।
लहँगा सुरंग चूनरी कंचुकी सोध सनी ॥
भूमि भूमि घन गरजत मंद मंद रमके दामिन रबनी।
फूले द्रुम प्रफुलित बल्ली सव भुकि परसत अवनीं ॥
गावत जील दुँति सुरलै लै मिल व्रज की कमनी।
किशोरीदास ब्रजचन्द्र भुलावत रसिकनि मुकट मनी ॥

❀ लुहरि लिख्यते ❀

आड ताला--

पावस रति साँवन मन भायो है।
प्यारी री श्री वन्दाबन माँझ लगत सुहायो है ॥
मन्द मन्द गरज सुहाई है।
प्यारी री भूमि भूमि चहूं ओर घटा भुकि आई है ॥
सीतल सुगन्ध मन्द पवन वहै।
प्यारी री बोलत कोकल मोर दामिन लहै लहै।
हरित भूमि अति ललित लता मनकौं हरै ॥
प्यारी री डोलत इन्द्र वधु अरुन रंग कौं धरै।
जमुना तीर कदम्ब डारी री प्यारी री रचि पचि रच्यौ है ॥
हिडोरौ गोप कुमारी उत आये भूलन लाल री।
प्यारी री इत तैं चलिये आप लै संग व्रजवाला री ॥
सुनत बढी चित छोंप चली लाड गहेली री।
प्यारी री एक तै एक छबीली संग सहेली री ॥
सन्मुख आये लाल लयी उर लायके।
प्यारी री लपटी घन सौं वीज मनौं छवि पायकैं ॥
दोऊ मिल चापनि चढ़े सुरंग हिड़ोरें री।
प्यारी री गाबत लूहरि सखी सव ह्वै चहुं ओरैं री ॥
चौपनि रमकि बढी अति सरस हो।
प्यारी री इत जमुना उत डार कदम्ब की परसही ॥

प्यारी री इत जमुना उत डार कदम्ब की परस ही ॥
श्रमकन मुख अंजल फहरावही ।
प्यारी री जोटन में झूकि प्रीतम उर लपटावहीं ॥
लता लता प्रति कुसुमनि बरखा ह्वै रही ।
प्यारी री झूलन आज हिडोरे की रंग ले कही ॥
निरखे किशोरीदास बढ़ौ आनन्द री ।
प्यारी री कीजे अटल विहार सुमिलि ब्रजचन्द्र री ॥

राग अड़ानी मलार-चोताला—

झूलत री आज ललित हिडोरैं दौऊ रंगीले ललन हो रंगीलीप्यारी
तैंसिय रंगीली मृदु कल कंठनि गावत हैं मिलि व्रज की नारी ॥
तैंसिय रंगीली वन की शोभा बोलत रंग–भरी कोकिल सारी ।
तैंसिय चौपनि रमकैं रंगीले कुमर किशोरी ब्रजचन्द विहारी ॥

राग प्रमुख—

झूलत प्यारी प्यारो रिमझिम वरषत गरजे घन ।
तैंसिय गावत व्रज सुन्दरी मिलि मृदु कल कंठनि ॥
तैसोई रंग भीनो रसालो हरि प्यारौ बृन्दाबन ।
किशोरीदास तैसीये रमकनि में बाजे नूपुरगन ॥

राग केदारो-इकतालो—

बृषभानु नन्दिनी झूलत रंग भरी नन्दनन्दन मिले ।
जमुना के तीर रतन जटित हिंडोरौ फूल द्रुम झूलि रहे जहाँ बोले
चातक कोकिल सीतल मन्द सुगन्ध पवन सौंध की झकोर आवे ।
फूले अमल कमल ऊपर गूँजत हैं अलि ॥
मृदु कल कंठन गावत आली ब्रजचन्द्र प्यारी रमकति चौपन ।
निरखि थकित है तहाँ मनमथ किशोरीदास जाय छवि पर वलि॥

राग मलार-रूपक ताल—

गरजत मन्द सुवरषत रिमिझिम जमुना तीर भूमि हरियारी ।
सघन कदम्ब तरै रतन हिडोरै झूलैं ललित लड़ेती ब्रजचंद्रविहारी
झरत परत कुसुम द्रुमलतन तैं मधुप गुंजारी । किशोरीदास
देखें वनि आवै सखी चहुंदिस गावैं मनु मैन फुलवारी ॥

राग मलार—

आवत उमड़ि घुमड़ि घन दामिनी दमके संग गरजत मन्द मन्द जमुना कूलनि। ललित कदम्ब तरै सुरंग हिंडोरौ रच्यौ भूमि रहे द्रुम भरे भार फूलनि॥ तैसेही गावत रंगीली ललितादि जूथ उपमा न आवे मन रमा नहीं तूलनि। झुलावत ब्रजचन्द्र छवीलौ कैसी नीकी लागत हैं रंग भरी राधाप्यारी जू की झूलनि॥

राग अमुख तिताला—

झूलन रंग करै हो।
वारि वारि वारि डारी रंगीली झूलन पै॥
झूलैं रंगीले रंग हिडोरे रंगीली रमिकन में चित चोरैं।
रंगीले तरल जोटन दुम परसैं रंगीले कच तैं कुसुमनि वरषैं॥
रंगीले भूमि झुकि अंक भरै री।
रंगीली तब रंग वरष परै री॥
रंगीली गावें व्रज नारी रंगीली मानौ फूली फुलवारी।
रंगीली हृदय वसौ री रंग रंग रंगीले व्रजचन्द्र किशोरी॥

राग सोहनी-इकताला—

झूलत कुंज चोवारे प्यारी।
रत्तन जटित को वन्यौ है हिडोरो शोभा बरनै का री॥
मृदु कल कंट जील सुर सौं मिलि गावत हैं व्रजनारी।
जमुना तीर निकट निरझर बन बोलत पिक सुक सारी॥
अंग संग झूलनि को जुवती ह्वै आये बृजचन्द्र विहारी।
किशोरीदास छवीली छवि लखि बोलि रही सुकमारी॥

झूलन आज सुहाई—

लाड़ली व्रजचन्द्र की लागत परम सुहावनी बृन्दाबन। झमकि झमकि झमकनि मन मोहे रमकि रमकि रमकनि बढ़ी लागी॥ झमकि रमझोल की झन। लरजि लरजि लपटत प्रीतम उर भूमि भूमि कै प्यारी मनु दामिन मिलिकैं छवि पावत धन॥ गरजि गरजि के वरष रहो रंग। सरस सरस सुख छायकै

किशोरीदास गावे सखी कलकंठन ॥

राग काफी—

या भूलनि पै हों वारी हों वारी हो वारी हो हौं।
वारी वारी हो बारि डारि हो बारि डारि हो फिर फिर वारि हौ
गोंर वरन चटकीली चूनरि अंग भूषन की जगमगानि बोर नख
रंगनि सोहत प्यारी हो। खिसि खिसि कुसुम परनि वैनी तैं बंक
बिलोकन की छवि न्यारी हो। तैसीय गावन ललित अलिन की
रति रस भीनी तानन किशोरीदास भुलावत व्रजचन्द्र बिहारी हो॥

❀ अथ पवित्रा उत्सव के कीर्त्तन ❀

राग मलार रूपक ताल—

पवित्रा पहिरें गिरधर लाल।
पचरंग पाट के सरस वनाये लै आई ब्रजबाल॥
कनक थार में अच्छित कुंम कुंम मंगल साज रसाल।
किशोरीदास व्रजचन्द्र विहारी प्यारी निरखत भए निहाल॥

राग मलार रूपक ताल—

पवित्रा पहिरें श्री जुगलकिशोर।
पचरंग पाट के सरस बने हैं रजत कनक को जोर॥
श्री व्रजचन्द्र प्यारी छवि देखो कोटि अनंग चितचोर।
किशोरीदास लख वस भये हैं चपल दृगन की कोर॥

❀ अथ राखी उत्सव के कीर्त्तन ❀

राग आसावरी चोताला—

सावन की पून्यौ मन भावन लागत है परम सुहाई।
राखी वांधन श्री व्रजचन्द्र कें विप्र सभा जुरि आई॥
राखी वांधत वेद मन्त्र पढि देत असीस सुहाई।
किशोरीदास पुनि वाँधत जसुमति छिन छिन लेत वलाई॥

राग आसावरी आड ताला—

राखी बाँधन को दुज आये ठाडे भानु की पौरी जू।
गादी तकिया सिंहासन धरि वैठीं जहाँ किशौरी जू॥

कनक रतन राखी बाँधन करि तिलक दीयों शिर रोरी जू ।
किशोरीदास व्रजचन्द्र विहारी चिरजीवौ यह गौरी जू ॥

राग शारंग तिताला—

आज सलौनौ सुभ दिन माई ।
जुगलकिशोर के राखी बांधन विप्र सभा जुरि आई ॥
राखी बाँधत वेद मन्त्र पढि देत असीस सुहाई ।
किशोरीदास व्रजचन्द्र विहारी प्यारी करौं विहार सदाई ॥

❀ अथ जन्माष्टमी की बधाई के कीर्त्तन ❀

राग भैरों तिताला—

अरी हों सोहिलो गाऊँ ।
बृजपतिरानी के लालकौं सुभदिन मंगल—
आज कौ री जसुमति कूँखि मलाऊँ ॥
वारि फेर दऊँ दान लाल पर कंचन मुक्ता मनि जरि लाऊँ ।
किशोरीदास व्रजचन्द्र निरखि कैं तन मन नैंन सिराऊँ ॥

राग भैरों इकताला—

बधाई वाजे वाजे वाजे नन्दराय दरवार ।
रानी जसुमति ढोटा जायौ गायौ मंगल चार ॥
देति दान भूषन मनि मुक्ता व्रजपति परम उदार ।
किशोरीदास व्रजचन्द्र प्रगट भये जीवन प्रान अधार ॥

राग विभास तिताला—

जसोदा नन्दन प्रगट भये ।
जा दिन तैं मनु मोद बढ्यो है सकल संताप गये ॥
व्रज नारी मिलि मंगल गावत उपजत तन मन मोद नये ।
किशोरीदास व्रजचन्द्र प्रगटे बिधि सव सुख आज दये

राग धनाश्री—

शुभदिन शुभ घडि में पिय प्यारी झूलि हिंडोरैं उतरे ।
मृदू कल कण्ठन मंगल गावत व्रज ललना के जूथ रे ॥
उतारि आतरी करति न्यौछावरि लेत निमुक्ता सूथरे ।

किशोरदास ब्रजचन्द्र सावन में फिर झूलें हैं प्यारी जूतरे ॥

राग धनाश्री तिताला—

मलनियाँ रूप रमाधरि आई ।
जन्म समय व्रजचन्द्र नन्द सदन में रंग वधाई ॥
कुसुम हार गुहि ल्याई ।
नूतन मंजरी वन पल्लव की वंदन मालि बनाई ॥
किशोरीदास वगवानी व्रज की रीझ रानी तैं पाई ॥

राग जैतश्री तिताला—

मिलि नाचे गावें हेरी दे ।
प्रगट भये व्रजराज कैरें सुन्दर मोहन लाल ॥
अति आनन्द सुन्यो गोकुल में मगन भये सब ग्वाल ।
आय जुरे नन्दराय कैरें ग्वालन के सब टोल ॥
हरदी दही परस्पर लेपैं छिरकत करत किलोल ।
कृष्ण जन्म सुनि फूल ही रे सबहिन कैं आनन्द ।
किशोरीदास के बड़भागन तैं प्रगटे श्री व्रजचन्द्र ॥

राग आसावरी जलद तितालो—

सब विधि आनन्द आज भयी हे ।
नन्द के नन्दन प्रगट भये सब दुख दुरि दूर गयो है ॥
जब तैं सुख सागर वाढ्यो सब प्रेम अमी पीओ हो ।
नव निध अष्ट सिद्ध व्रजजन घर अचल निवास कियौ है ॥
गावत मंगल मिल व्रजनारी तन मन मोद नयो है ।
किशोरीदास धनि कूखि जसोदा व्रजचन्द्र जनम लयो हैं ॥

राग सारंग तिताला—

बाजत नौवति अरु सहनाई ।
रानी जसुमति ढोटा जायौ मौहन सुन्दर श्याम कनाई ॥
आनन्द रंग वढौ गोकुल में घर घर मंगल बढत बधाई ।
व्रजनारो झुंडन मिलि आवत गावत प्रमुदित गीत सुहाई ॥
कौरेनि साँथिया चित्रिति रचि रचि द्वारन बंदन माल बंधाई ।
प्रगटे श्री प्रजचन्द्र नंद घर किशोरीदास सुख निधि सब पाई ॥

राग मलार तिताला—

बधाई सुहाई रे।
ब्रजरानी मोहन सुत जायौ ब्रज जीवन सुखदाई रे ॥
गृह गृह तें बनि गावत मंगल ब्रजनारी जुरि आई रे।
निरखि निरखि कै श्रीव्रजचन्द्र मागत असीस सुहाई रे ॥
नन्द सुवन अति वल्लभ हमकौं मंगल रहो सदाई रे।
किसोरीदास फूले तन मन अति मन बांछित निधिपाई रे ॥

राग जाना ताल—

आज व्रजराज कै सदन प्रगट्यो कुंवर नन्द घरनि आनन्द गहगह्यौ
सुख कौ सिंधु बढो गोकुल में सोवत फूल फूल्यौ व्रज महमह्यौ ॥
गावत अलि मिल मिलकै मंगल तनमनि मोदबढत अतिलहलह्यौ।
जन्मे श्री ब्रजचन्द्र सुख उपजो किशोरीदास जात कापै कह कह्यौ॥

राग नायकी तिताला—

सोलह रंग सौं गावैं सुन्दरि जसुमति सुत ब्रजचन्द्र को नन्द सदन आनन्द सौं। चौपनि घुरि घुरि सरस सूरनि सौं लेत तान तरंगसौं
अति चंचल चपला तैं नीकी इक नाचत भरि भरि उमंग सौं।
किशोरीदास धीकट धुकट तक धीवंग थो परनि परत मृदंग सौं॥

राग सोहनी आड ताल—

मंगल जुरि गावैं बजनारी मिलि मिलि बजपति सदन बधाई।
बाजत सुखद सुहायने सुहाये गह गहे अति सुख दाई ॥
आंगन चौक साँथिया कौरन झलमलाति दीपक की झाँई।
द्वारैं धुज वर वंदन माला जय धुनि गोकुल छाई ॥
प्रगटे कुल दीपक बज के चन्द रानी जसोमति कूखि सिराई।
किशोरीदास घन गरजि चहुँ दिश आनन्द झरी लगाई ॥

राग मारू तितालो—

अरी हेली बाजत रंग वधाई रे नन्दराय दरबार री।
अरी हेली रोहनी बुध अष्टमी भादौं अति सुखदाई री ॥
जसुमति कूखि सलच्छनी प्रगट कुंवर कनाई री।
घर घर तै सब बज वधु मंगल गावत आई री ॥

बाजै वाजत गहि गहे गावत गीत सुहाई री ।
अति आदर जसुमति कीयौ भीतर भवन बुलाई री ॥
जसुमति कै पीयें लागि कें सिसु मुख देख्यौ धाई री ।
निरखि निरखि मुख चन्द्रमा देत असीस सुहाई री ॥
मंगल कलस भराय कें कदली द्वार रुपाई री ।
चन्दन भूमि लिपाय कै मोतिन चोंक रुपाई री ॥
घृत सनजुत दीपक कीये जगमगि जोति निकाई री ।
कौरन साथियाँ चित्र कें वंदन मालि वधाई री ॥
आनन्दित गोकुल भयौ परी हैं निसानन घाई री ।
पसर उठे जो ग्वालिया तिन सुनि गइया बगदाईरी ॥
आय जुरे ब्रज राज कैं आनन्द उर न समाई री ।
नाँचत गावत प्रेम सों सब मिलि हेलरी गाई री ॥
मगन भये तन मन सबै दधि की धूमि मचाई री ।
दधि दूधन सौं खेलहीं माखन मुख लपटाई री ।
वरषत भादों मास जों नदी घृत दूध वहाई री ।
उमगि चल्यो रस सिन्धु ज्यों लहरि चहुँ दिस धाई री ॥
घोष कुलाहल अति बढ्यो ढाडी ढाडिन सुधि पाई री ।
अति आतुर सौं उठि चल्ये तन मन अति हरसाई री ॥
सींग पोर पहुंचे तबै ठाडी हुरक बजाई री ।
अति आदर व्रजपति कीयो दुजन असीस सुनाई री ॥
नन्द तिहारो लाडलौ चिरंजी रहो सदाई री ।
फूलि भई सुरलोक में कुसुमावलि वरसाई री ॥
जै जै शब्द उचार कैं देव दुन्दुभी वजाई री ।
अति उदार नन्दराय जू नवनिधि तुरत लुटाई री ॥
जो माग्यो सोही दयौ हँसि हँसि गोकुल राई री ।
जाचिक जन वहु भाँति कै कीये रंक तै राई री ॥

राग सोरठा तथा विशाबन—

मंगल बधावनौ ।मं। नन्दराय सदन सुहावनौ (सु)

सब विध रंग वरषानों रंग छिन छिन मुख सर सावनौ (मु)
बृजजन मनकौं भावनौ (मं) चाल ।
भावनों बृजजन मनकों ललन जसुमति कें भयौ ॥
आनन्द कीनी नन्द नृपति कैं जनम मंगल निध लयौ ।
उदित भयो व्रजचन्द्र छवि दुख तिमिर सव दुरि गयौ ॥
अष्ट सिद्ध नव निध घर आनन्द भयो नयौ ।
जुरि मिल आवहीं (जु) व्रजनारि मंगल गाबही (मं)
व्रजरानी कूखि सिरावहीं (कू) कुँवरि कौ सोहलो मनावई (सो)
मोतिन चौक पुरवाई (चौ) चाल ॥
पुराई मिल चौक सुन्दर साथिया कौरन दये ।
वाधि बंदन माल द्वारै अम्ब पल्लव गुहि लये ॥
कलश तोरन धुज पताका जगमगत दीपक नये ।
सुनत ताल मृदंग ताल की धुनि सकल अमंगल भजि गये ॥
सब मन भाई (स) नौवव पर समुहाई । (प)
रंग सौं वजै सहनाई (व) वधाई व्रज पर धाई (व्र)
व्रज मंगल भरी लगाई (भ) चाल
लगाई मंगल भरी चहुँदिस उमग रस सागर वह्यो ।
सो वन फूल्यो फूलो गोकुल अति प्रकाशित गह गह्यौ ॥
सोभित द्वारै ग्वाल रंगीले छबि देख सुरपति लजि रहे ।
हेरी देदे नाचत छिरकति परस्पर अंगन दहो ॥
वेद पढ़ाय कै (वे) दीवे दान सवन अधिकाय कैं (स)
दुज देत असीस सबैं सुनाय कैं (अ) जीवो ढोटा श्रीव्रजराय कै
श्री जुवती लेत वलाय कैं । चाल ।
लेत बलाय निहारि शिशु मुख हरखि सब बजवासनी ।
जीवौ कोटि वरीस लालन कहत सकल सवासनी ॥
गोकुल पट भूषन दीने लीने प्रेम प्रकाशनी ।
किशोरदास कों रीझरानी दीयो निकट निवासिनी ॥

राग खमावचो तिताला—

एरी ए वजत मन्द लरारी आजि नन्दराय दरवार।
ब्रजपति सुत जनम भयौ है गावत मंगल चार॥
कुल दीपक व्रज चन्द्र रसिक मनि प्रगटे परम उदार।
किशोरी दास रस मय कीये सब मिटे दुख द्वन्द अपार॥

॥ राग मारू इक ताला ॥

माई रंग रंगीली बधाईयाँ।
जसुमति रानी ढोटा जायौ श्याम सुन्दर मुख दाईयाँ॥
गृह गृह प्रति अरुवीथिन वीथिन बढ़ो आनन्द अधिकाईयाँ।
सदन सदन धुज नौवत वाजत वंदन माल वधाईयाँ॥
कलश दिया अलि चौक साँथिये कदली द्वार कपाईयाँ।
व्रजनारी मिलि मंगल गावति लागत परम सुहाईयाँ॥
नन्द सुवन की शोभा अद्भुत वरनी कोये आईयाँ।
प्रगटे श्री व्रजचन्द आपही किशोरी दास मन भाईयाँ॥

॥ राग ईमन तिताला ॥

आजि लला की वधाई पाँऊ।
हों सेवक व्रषभानु नृपतिकौ वरसाने तें आऊँ॥
जीवो कोटि वरीस नन्द नन्दन वहुत भाँति तुमको सुख दीज्यौ।
नित बाजत गीत मंगल धुनि निरखि कुंवर को कीज्यौ॥
यह सुनकें व्रजराज नृपति मो मन भायौ कीनौं।
किशोरी दरस की पीठ थापिकै वास वृन्दावन दीन्हौं॥

॥ राग रामकली इकताला ॥

आजि नन्दरायकें अंगना।
आनन्द कौं झर लागि रह्यौ री मंगल गावत ललना॥
जसुमति जायो लाल मनोहर किशोरी दास व्रजवसना
ह्वै है अचल चंचला अव व्रज फिरि न होय हल चलना॥

॥ राग अड़ानो आडताल ॥

आजु जायो है जसुमति लाल।
आनन्द कौं झर श्री गोकुल गाबें मंगल व्रजवाल॥
देत दान नन्दराय सवनिकौं हयगज मुक्तामाल।
किशोरी दास ब्रजचन्द्र जनम्यौ कीन्हे रसकनि माल॥

॥ राग मैंरू इकताला ॥
(सांथियो।)

झगरत माँगत नेग सवासनि धरति साथियाँ द्वार॥
भयौ हमारे मन कौं चीत्यौ जनमे नन्द कुमार।
हय गज वसन गाय अरु सौनौं भूषन देहु रतन भरि थार॥
जो माग्यौ सो दयौ जसोदा किशोरी दास कौं वास बृन्दाबन दीन्हौं सम्हारि जिहिवार।

॥ राग मलार आडताला ॥

नन्द के आनन्द की निधि आई।
भयो भावतौं व्रज जन कौं रानी जसुमति कूखि सिराई॥
गोकुल में मंगल झर सजनी घर घर होत बधाई।
किशोरी दास व्रजचन्द्र प्रगट भये त्रिविधि ताप नसाई॥

❀ अथ पालना उत्सव के कीर्तन ❀

॥ राग रामकली रुपक ताल ॥

झूलौ पालने में नन्द नन्दन।
सुन्दर रचि पचि गढ्यौ गढ़इया तुमकों आनन्द कन्द॥
छोटी छोटी दतियाँ पीत झँगुली हसै कछु जब मन्द।
किशोरी दास तन मन अति फूलै देखैं श्री व्रजचन्द॥

॥ राग कान्हरौ तथा ॥

जसोमति ढोटा पालेनें झूलै।
जननी देखि देखि मनहीं मन आनन्दित अति फूलै॥
लै अँगुरी मुख किलकै कन्हाई त्यौं मिटत अन्तर सूलै।
किशोरी दास व्रज चन्द्र विहारी छवि निरखत दुख भूलै॥

॥ राग कान्हरौ भीमा तिताला ॥

देखी हो बड़ भागिन जसुमति निस दिन श्याम सुन्दर दुलरावत ।
मुख चूम्वति अरु छतियाँ लगावत पैं प्यावत पुनि पलना भूलावत
गावत गीत मन्द मधुरे स्वर लै लैं सुरंग खिलोना खिलावत ।
पहिरावत कुल ही झगुली वर नाना विधि के लाड़ लड़ावत ॥
निरखि निरखि कैं अपनी दीठि डर रुचि सौं भाल चखौड़ा वनावत । किलकि किलकि व्रजचन्द्र हँसत जब जननी पुलकि पुलकि दुलरावत ॥ राई लौन उतारि डारि लखि लखि अपने सुत जीव जिवावत । अलाय बलाय लाल की कृपा करि किशोरी दास हैं सगरी ध्यावत ॥

॥ राग सोरठि तिताला ॥

हों वारी वृजचन्द्र आँगन खेलौ पायनि पायनि ।
रुनझुन रुनझुन नूपुर वाजै इनकै चाँय निवाँयनि ॥
सुन्दर श्याम केस घुँघरारे देखो आँयनि आँयनि ।
किशोरीदास जननी दुलरावत सोहिले गाँयनि गाँयनि ॥

❀ अथ श्री राधा अष्टमी को उत्सव के कीर्तन ❀

॥ राग भैरू आड़ ताल ॥

जनम लीयौ श्री राधा प्यारी ।
रूप शसि अंग २ माधुरी कही न जात कछू सुन्दरतारी ॥
अष्ट सिद्धि नवनिद्धि मुक्ति सब रमा उमालै सगरी नारी ।
ह्वै व्रषभानु लली की चेरी मानत धन्य भाग बढ़ भारी ॥
जबते अमंगल सगरे नासे मंगल की भई अधिक उज्यारी ।
किशोरी दास वृजचन्द्र चन्द्रिका प्रगट भई सुख निध सुकमारी ॥

॥ राग भैरू इकताला ॥

मंगल मिल गाओ री आओ ए गोपराय दरबार ।
आनन्द निध सुख निधि शोभा निधि श्री राधा लीयौ अवतार ॥
वाजत नौवत अरु सहनाई वीन मृदंग मौहचंग कठतार ।
नाचत कमलासी नटी आंगन सुर बरषत सब कुसुम अपार ॥

पूरत चौक कोऊ कलश सांथियें कोऊ वांधत वन्धन वार।
किशोरी दास की जीवन प्रगटी वृजचन्द्र प्रानन आधार ॥

॥ राग ललिता तिताला ॥

गावौ सोहिलौ लड़ावौ कीरति कुंवरि दुलारी।
बढ़ भागी बृषभानु नृपतिकैं सोभा निधि प्रगटी राधाप्यारी ॥
व्रज की चन्द्र चन्द्रि का ब्रज जीबन कुल उजियारी।
किशोरी दास उन्हें अति मंगल की अब होत है वरषा भारी ॥

॥ राग ललिता -तथा ॥

हेली आजि दिन घरी सुभविरियाँ।
सुख समूह वरषत है चहुँ दिस लागी ब्रज आनन्द झरियाँ ॥
मंगल निधि ब्रजचन्द्र चन्द्रिका रसकी निधि अब तरियाँ।
किशोरी दास कूखि कीरत सुफल अति फली अव छिन छिन होत बढ़वरियां ॥

राग मालकोस जलतिलाला—

कीरत कुंवर छवीली राधे चिर जीवो यहैं प्रांनन प्यारी।
आनन्द विधि मिलि मंगल मनि विधना दीनी कुल उजियारी ॥
श्री वृषभानु राय के पुन्ननि प्रगटी हैं सुन्दर सुकमारी।
किशोरी दास व्रज चन्द्र चन्द्रिका सजनन की सुखकारी ॥

राग मालकोस इकताला—

माई बरषानें सरस आनन्द प्रगटी राधा बालरी।
आनन्द निधि सुखनिधि सोभानिधि सुन्दरता की रासि छबीली रसमै रसिक रसालरी ॥
अति सुकुमारि अंग २ माधुरी श्री व्रजचन्द्र चन्द्रिका विसालरी।
श्रीबृषभानु कुँवरि लाड़िली किशोरीदास निरखत भये निहालरी॥

रोग टोडी तिताला—

हेली रानी कीरति कन्या जनी।
चहुं दिश उमड़ि घुमड़ि आनन्द की होत है वरखा घनी ॥

व्रज की चन्द्र सिरोमनी राधे प्रगटी मुकटमनी ।
जनमन प्यारी सब बिधी सौं अरु किशोरी दास नीकी वनी ।

—❀—

राग जत श्री –तथा—

मिलि आवौ गावौं हेरी दै ।
प्रगट भई बृषभानु कैरे राधे राजकुमारि
यह सुनकै मन मोद वढ्यौ व्रज उमगि चले नर नारि ।
निज मन्दिर आये सबेरे फूलैं उर न समाय ।।
नाचत कूदत हँसत हसावत गिनत न राजा राय ।
दई बधाई धाय कैं रे रावलि राय उदार ।।
दीन्हे पाट पटाम्बर बहुविधि भूषन वसन अपार ।
चिरजिवौ यह लाड़िलीरे पुजई मन की आस ।।
श्री ब्रजचन्द्र विहारी की जोड़ी सरन किशोरी दास ।

—::—

राग धन श्री तिताला—

ढाढ़िनि नाचति ढाढ़ी गावत ।
जनम समय राधा प्यारी कै फूले उर न समावत ।।
पूरन करी कामना सबविधि भये मनोरथ भावत ।
जनम जनम की आस पुजई कीरति कन्या जावत ।
कूदत किलकति हँसति लली गुन वार वार दुलरावत ।
श्री व्रजचन्द्र गोकुल में रावल राजकुंवारि सुहावत ।।
सो सुख चाहत हौं अपने उर सो लखि नैन सिरावत ।
किशोरी दास प्यारी सरिने ब्रजवास बधाई पावत ।।

—०—

राग धना श्री तिताला—

शुभ दिन मंगल आजि ।
जनम लीयो श्री राधा प्यारी सिद्ध भये सब काज ।।
धन्य कूखि कीरतिदा रानी धन्य भानु नृपराज ।
किशोरी दास की जीवन प्रगटी गये अमंगल आज ।।

राग सारंग तिताला--

आजि बृषभानु कें आनन्द ।

प्रगट भई शोभा त्रिभुवन की व्रज की पूरन चन्द्र ।।

रति रंभा कमलादि नहिं जाके कोटि अंश समुताई ।

कोटि कोटि देवनि तैं नीकी कीरति कन्या जाई ।।

यह सुनि गोपी जुरि जुरि आई गावत मंगल चार ।

वाजत मंगल भैर दुंदुभी गोपराय दरवार ।।

द्वारैं सँथिया भरि भरि पूरति मोतिन चौक संवारि ।

ठाँय ठाँय सोहत कलश दिपावलि वाँदत मंगल बारि ।।

लैं दधि छिरकि परस्पर अंगन आगन नाचत गोप ।

नंदीश्वर तैं वरषाने में दूनी वाढ़ी ओप ।

वेग वधावै दई वधाई जसुमति आनन्द राय ।

सुनि आये ले सज मंडली फूलै उर न समात ।।

मिलि बैठे समधी इक ठौरें सोभा बरनै कोरी ।

आनन्द मंगल इन्हे उन्हें अति झरलागो चहुँ ओरी ।।

वंघू बंधू समधी पहिराये विप्रनि वहु धनि दीये बुलाय ।

माँगन आये भांनु भवन जे कीये रंक ते राय ।।

पूरनि भई कामना सबकी मन वांच्छित फल पाय ।

अष्ट सिद्ध नव निद्धि मुक्ति पावत जे मांगत आय ।।

प्रगट होत चन्द्र चन्द्रिका असुभ मिटौ संसार ।

किशोरी दास सुख सागर वाड्यौ तबही तै निरधार ।।

राग हमीर-जात्रा ताल—

आनन्द आजि बृषभानु नृपति घर प्रगटी राजकुमारि ।

झकुकझिकिमिकितकुक तकथेई तथेईथोदिग बाजत मृदंग उघारि ।।

मंगल गावत वीन बजावत झनन झनन झिन झिन झनन सुधारि

किशोरी दास यह दान सुहाये कड़ कड़म्व झ्यांग कड़ कड़

झ्यांग झ्याँग झ्यांग कड़ कड़ वजत सुन्दर वर।

राग गौरी तथा—

आज बृषभानु के सदन वाजत सुनो नौवत रुचिर नीची गति सौं।
कैसो लागत रंग भीनो मंगल गावत अलि नीकी जति सौं ॥
जनमी श्रीराधा सब सुख साधा रसिकन जीवनि भरी रस अति
सौं। प्यारी श्री ब्रजचन्द्र विहारी जू की किशोरी दास सुख दाई
वहुभति सौं ॥

राग गौरी—

अलि मिल आज बधावौ गावौ ।
भांति भांति की आसा पुंजई मन वांछित फल पावौ ॥
कीरति रानी कन्या जाई जाके गुन दुलरावौ ।
श्री बृषभान राय जू के मन्दिर मंगल मोद वढ़ावौ ॥
श्रीव्रजचन्द्र चन्द्रिका प्रगटी लखि लखि नैन सिरावौ ।
ब्रजसिर ताज रसिक शिरोमनि किशोरी चरण सब धावौ ॥

राग कानरो आडताल—

मृदंग वाजे गावैं मंगल भानुराय दरवार ।
तत्तकड़ कड़ धी धी कड़ कड़ तकधि लांग तकथोधन ज्यौं औघर
गाजै ॥ ध्रुम ध्रुम ध्रुम ध्रुम कड़ कड़ धी धी धीकड़ कड़ धीसर
गति साजै। जनम समय बृषभानु किशोरी कै नरत गुनी जो
समाजै ॥

राग नायकी इकताला––

भई कीरति जू कै कन्या ।
अति बढ़ भाग सवै शुभ लच्छिन रसिकनि जीवनि धन्या ॥
मन वांछित फल देत कृपा करि वनत न काहू अन्या ।
किशोरी दास व्रजचन्द्र विहारिनि प्रगट भये दुःख हन्या ।

राग परजा तथा––

माई आजि भांवती वधाइयां ।
वरसाने वृषभानु नृपति कै लागत परम सुहाइयां ॥
मंगल की मनि कीरति जाई राधा सुख धाइयां ।

बाजत तूर तरूनि मिल नाचत परत निसाननि घाइयाँ ।।
सदन सदन अरु वोथिन वीथिन आनन्द झरी लगाइयां ।
सब व्रज में सुख संपति घर घर छिन छिन होत सवाईयां ।।
प्रगट होत व्रजचन्द्र चन्द्रिका वढ्यो आनन्द अधिकाइयां ।
किशोरी दास फूलै अति तन मन मनवांच्छित फल पाईयां ।।

राग अड़ानौ -तथा—

नौबति वाजै भानु कै दरबार ।
झ्यां झ्याँ झ्यांकङकङ झ्यांकड़ कङ कङ झ्यां मेघगतिनि गाजै । झया झङा झङा झङा धी धी धी धी झङा झङा सरस जतिनि साजै । किशोरी दास सुहाई लागत सुनि अमंगल भाजै ।।

राग सोरठि तिताला—

हेली सुदिन घरीरी आज ।
मंगल मणि वृषभानु नृपति के प्रगटी सब सिर ताज ।।
कीरति कै कीरति भई सजनी ब्रजजन कौं सुख काज ।
मिलि ब्रजनारी सौं हिलौ गावै गुनी जन करत समाज ।
राधा जनम होत ही चहुं दिस आनन्द वरषौ गाज ।।
किशोरी दास सुख सागर वाढ्यौ अशुभ गये सब भाज ।

राग नाइकी आड़ताला—

लली को सोहिलौ गाऊँ ।
आनन्द की निधि लड़ित लड़ैती वार वार दुलराऊँ ।
कीरति कै कल कीरति प्रगटी काहू जसु गाय सुनाऊँ ।।
करन प्रकाश भानुकुल आई किशोरी दास छवि निरखि कै नैन सिराऊँ ।।

राग सोरठि आडताला—

मिलि मंगल गावै री सजनी वल्लभराज कैं ।
रंग भीनी गोरी वरषाने की भूषन नवसत साज कैं ।।
बजत हैं सहदनि घुर घुर आनन्द कै सुखदाई ।
आनन्द निधि सुखनिधि स्वरूप निधि कीरति कन्या जाई ।।

सरस्वती शैल सुता कमलादिक सवै रूप की रासी।
हूं जानत या अलक लड़ी की सब मिलि ह्वै है दासी॥
नीरस जगत रसीली प्रवीन हो प्रगटी रस की रास।
किशोरी दास कीनें रसभीनें दै वरसाने वास।

राग राम कली इकताला—

शुभ दिन आजु कौरी भई वृषभाँन जू के सुता।
देखी सुनी न ऐसी कँवहू प्रगटी अति अद्भुता॥
अंग अंग प्रति अमित माधुरी अरु सब शुभ गुन संयुता।
किशोरी दास झलकत उर सिगरे जे रस प्रेमहुता॥

❀ अथ श्री लाड़िली जू के पालना के कीरतन ❀

राग आशावरी रूपक ताल—

कीरति कुंवरि उज्यारी राधे झूलत पलना माँहीं।
छोटी छोटी दतियाँ चरन महावर निरखत नैंन सिराहीं॥
अंग अंग सुकुमारि माधुरी देखत मन न अघाही।
किशोरी दास व्रजचन्द्र विहारी प्यारी पर वलि जाहिं॥

राग परज तिताला—

लाड़िली हो हो आजि झूलत झूलत है री पलनां।
हालरौ हुलरावत मईया मंगल गावत है ललनां॥
वारि वारि कंचन मनि मुक्ता वांटत भरि भरि डलना।
किशोरी दास लखि नैंन सिरावत विन दैखे पल कलना॥

राग आसावरी रूपक ताल—

हालरौ हलराव माता।
पय प्याऊँ कै पलना झुलाऊँ चूमि चूमि कै यौ कहिवाता॥
देखि खिलोना नाना रंग कैलै पठये हैं तोकौ ताता।
कुँवरि किशोरी मंगल निधि आनन्दनिधि मोहि विधाता॥

राग सारंग तिताला—

झूलति पालनैं प्यारी।
जननी निरखि निरखि मन ही मन करत प्रान वलिहारी॥

पय प्यावत चूमत दुलरावत लखि फूलत सुकुमारी ।
किशोरी दास खिलौना खिलावत गावैं सोहिले व्रजनारी ।।

❀ अथ बावन जू के जन्म उत्सव के कीरतन ❀

राग सांरंग तिताला—

प्रगटे श्री बावन सरूप ।
श्याम बरन मनोहर मूरति सोहै पीतवसन अनूप ।
देब काज सुधार करन हित छले जाय बलि भूप
दास भक्त हित आतुर धावत गिनत नव रखा सीत अरुधूप ।
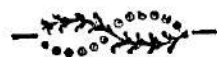
❀ अथ दान लीला के उत्सव के कीर्तन ❀

राग विलावल तिताला—

कहत नंद कौ लाड़िलौ दान देहु व्रजनारि ।
बरसाने ते ग्वालि सकल जुरि भुंडनि धाई ।।
एक वैस इक रूप अंग अंग सुन्दरताई ।
चन्द्र वदनि मृगलोचनी नवसत साजि सिंगार ।।
मधि वृषभानु की नंदिनी श्री राधे राजकुंवार ।। १ ।।
गिरधर गिर की सिखर टेर ग्वालन कौ दीनी ।
दधि कीमटुकी लिये जाति ग्वालिनि रंग भीनी ।।
सब मिलि घेरौ दौरि कै खोरि साकरी जाइ ।
दान लेहु भैया अबै दिन दिन कौंजु चुकाइ ।। २ ।।
सखान संग घेरी आय अटक मानत न अमानी ।
टेरि बुलाये लाल दोरि आये दधि दाँनी ।।
रोकी अबरा पकरि कै कह्यौ दीजे दधि के दान ।
करिहों निवेरौ सब दिनन कौ मोहि नन्द की आन ।। ३ ।।
।।ल०।। बोलिये जीभ सम्हारि बात यह नाहिं भली है ।
यह व्रज की सिरताज श्री वृषभान लली है ।।
दान न कान सुनो कहूं सो तुम मांगत आय ।
नई रीत ह्वै है नहीं सुनो कुंवरि व्रजराय ।। ४ ।।

इन वातन कहाँ लहो दीजिये दान हमारो।
बिना दिये नहीं जाउ कोटि जतननहिं तुम विचारो ॥
सुनि राधा नव नागरी नाट हमारी मेट ।
आज प्रात बड़ भाग सौं भई अचानक भेट ॥ ५ ॥
तब वोली सतराय छाँड़ दै वाट हमारी ।
यहाँ वाबा कौ राज कछु ना चले तिहारी ॥
गुपत प्रीत प्रगटत अवै सुन नव रंगी कान ।
वढ़ि जैहै झगड़ौ तवैं सुनि लै हैं बृषभान ॥ ६ ॥
कहत व्रज नागरी ।
एसे हटकै कीयें दान नहीं हमपै पइयें ॥
जो तुम चाहौ दान पाँय परि नाँच रिझयें ।
वर वीर कैसे पाय हो करिहू जतन अनेक ॥
मन माने सो कीजिये मेरी टरत न टेक ॥ ७ ॥
सुन राधे नव वाल कृपा अब हम पै कीजै ।
शरनागति मोहि जान गोरस रस को दीजै ॥
रीझ वृन्दादेवी दीयो दधि को कम को नेग ।
चलिये नवलित कुंज में उनको पूँछ न बेग ॥ ८ ॥
सुनति रंगली वात छवीलौं मृदु मुसकाई ।
रसभरि रंगभरि चली लाड़ली संग कन्हाई ।
आये मनोज संकेत में दीनो दान चुकाय ।
श्रीब्रजचन्द्र लड़ैती छवि लखि किशोरी दास बलि जाय ॥ ९ ॥

राग राम कली—

एरी ए नारी दान दै ।
मागत नांगर नन्द लाड़िलौं सुनिये हो कान दै ॥
गहवरवन जह सघन कुंज में चलि अपनौ **रसपान दै** ।
किशोरी दास व्रजचन्द्र विहारी बहुविधि करि सनमान दै ॥

राग रामकली रुपकताला—

घेरी हम खोरि सांकरी आन ।
मागत गोरस दान अनौखौ सो न सुन्यौ कहुं कान ।।
नई रीति चलि है नहीं व्रज में काहे व्रथा हठ ठान ।
मारग छाँड़ि जान है हमकौ तोहि बबा की आन ।।
क्यों सतराय करत दृग टेढ़े दधि बिन दिये नहीं पैहौ जान ।
तनक प्याय घर जाहु किशोरी करि व्रजचन्द्र सनमान ।।

राग ललित जलद तितालौ—

मागै मागै मागैरी अनौखौ दान ।
प्रातहि आइकै खोरि साँकरी वखट वरजोरी ठान ।।
दौरि उतारि सीस तैं मटकी गोरस लागे खान ।
किशोरी दास व्रजचन्द्र नैकहू करत न काहू की कानि ।।

राग विलावल तितालौ—

या व्रज में तुम ही अनौखे छैल ।
आवत जात टोकत वधुअन कों रोकत वनघन गैल ।।
दौरि निसंक गहत मेरौ अचरा मागै दान करै वहु फैल ।
किशोरी दास अब दीसै है जैसैं व्रजचन्द्र भये हौ अरैल ।।

राग रामकली आड़ताला—

छिनहुँ बिछुरन प्रात सहि न सकै प्यारौ गैया चरावन मिसआय ।
बैठे मोर कुटी नन्द नन्दन मुरली सरस बजाय ।।
प्यारी दरस चौंप ब्रजमोहन कीन्हों अद्भुत ख्याल ।
लडुआ फैंकत गहवर वन में लूटत हैं ग्वाल वाल ।।
रस कोलाहल सुनत लाड़िली निकसी कौतुक देखन चाव ।
आतुर जाय मिली रस स्वामिनि रसिक शिरोमनि राव ।।
भये मनोरथ सिद्धि दोऊन के मिलि राधा ब्रजचन्द्र ।
किशोरी दास वर्सांने वर्षत सरसत परमानन्द ।।

राग रामकली रूपकताल—

अनौखौ छैल नन्द कौ रोकि रह्यौरी दगरौ।
मागत गोरस दान लड़िली पै मचि रह्यौरी झगरौ ॥
आजि सांकरी खोरि में सजनी सबतैं आनन्द अगरो।
और ब्रज चन्द किशोरी कौ कैसे कह्यौ जाय सुख सगरौ ॥

~ ~ ~ ~

❀ अथ साँझी उत्सव कीरतन ❀

राग पूर्वी इकतालौ—

श्री राधे जू बीनन फलन आई।
जमुना तट श्री वृन्दाबन में संग सहेली सुहाईं ॥
सहज सिंगार ओढ़नी सारी बनी सकल एक ही दाईं।
एक तैं एक सखी सुन्दर तन तुली नहीं रमां समताई ॥
ओलनि कुसुम कमल हाथनि में गावत गीत सदन हैं धाईं।
अली व्रजचन्द्र किशोरी साझी रुचि करि व्यारू सुख पाईं ॥

राग गौड़ी आड़ताला—

मेरी सरवसु जीवन लाड़िली जीवन धन मदन गोपाल।
ये जसुमति जू के लाड़िले वे कीरति जू की वाल ॥
आईं गोप कुमारीं जुरिकैं कीरति जू के धाम।
करि सिंगार हमारे संग देहु राधा जाकौ नाम ॥
तब कीरति जू अपनी कुवरि कौ सिख नख कर्‌यौ सिंगार।
सारी अंगिया लाल किनारी लहँगा छायेदार ॥
अति आनन्द होत मन देखे सोंधें रगमगे केश।
शीश फूल मागैं मोतिन की बैंदा आउ सुदेश ॥
बेंदी लाल भाल पर सोहैं करन फूल ताटङ्क।
खंजन मान हरन अखियां अति भौहैं वरनी वङ्क ॥
नासा वेसरि मुक्ता लटकै अधर दसन सुरंग।
चबुक बिन्दु गोरी जू पीठ पर बैनी मनहु भुअङ्ग ॥

कंठपोति दुलरी तिलरी उर चम्पकली वनमाल ।
हार जलज हमेल चौकी चमकत है जु रसाल ।।
अंगद वाजूवन्द चुरीकर वंगली गजरा गोल ।
कंकन रतन चौक अरु मुदरी आरसी अमित अमोल ।।
किङ्किनि भावी फौंदा जेहरि पग नूपुर भनकार ।
पायजेव अरु अनवट विछुआ नख चन्द्र चमकार ।।
यह विधि करि सिंगार सदन तें लै चली सखिन साथ ।
वन में वीनत फूल सखी सब डलियाँ लीयें हाथ ।।
चम्पो पाउ केतगी करुना कोयल कमल सुरंग ।
जाय जुही अरु पीत चमेली स्वेत चमेली कुलङ्ग ।।
मल्ली माधुरी सैव मौल सरी कुन्द कहार सिंगार ।
अज पार्वा गुलाव सेवती गुल महदारु अनार ।।
दावदी गुलवाँस काकरो गुल तुर्रा जु कनेर ।
सनके जरद तोरई तिलके पीय वास में फेर ।।
दुपहरिया केसर खंडी सुरजुगल जु निवारी ।
रायवेल मालती सरन मौनजाय हजारी ।।
सद गुलाव मुनैयां नव रंग पारिजात अरु केलि ।
आसिक पेचाना फुरमा सौन जुही पुनि वेलि ।।
नासि पोस्त हमारी मौगरा गुललालरु गडुल ।
स्वेत नील अरु पीत कमल है प्राग पुष्प रहे भूल ।।
भजन्यौ केवरा अगरित कटेल सैमर नागर आल ।
आजु ही मोंगरा चम्पा कोदनि गुल अनार को माल ।।
स्वेत लाल अरु पीत वसन्ती वाँसे के सब तोरे ।
श्रीखण्डी सिंधुप कसुंमी रतन मंजरी के जोरे ।।
गुल अमर गुल मोमन गुलवान गुलतासर कदम्ब ।
गुल कास्मी सोसनी मै मोगरा केसू सौभाहदम्भ ।।
पुष्प राज के पुष्प लीनै मधुमन अरु मन्दार ।
वरना अदि है गुल द्रमन के लीने रंग रंग चार ।।

सदा वसन्त कुसम्मी सुदर्शन काकरी झुनझुने फूल ।
फूल कहे इक सन्त भांति के तोरे जमुना कूल ।
डरियन में झोलिन में लीन्है गुहि गुहि गेंद जू कीन्ही ।
खेलन ख्याल परस्पर सजनी सजनी मन में अतिरँगभीनी ।
यह कौंतक देखन कौं मोहन सखी वेश तब कीन्हों ।
छिपत गलीकुञ्जन के नियरे आय दरस तव कीन्हों ।
द्रष्टि परे तब ही प्यारी की लीन्हे निकट बुलाय ।
पूछत कहौ कहाँ रहौ हेली कहों मोसे समझाय ।
कहन लगी नव सखी सांवरी बोली मृदु मुसकाय ।
नन्दि ग्राम में वास हमारौ श्यामा नाम कहाय ।
सुनत नाम श्यामा तब ही उपज्यौ मन में मोद ॥
नन्दराय घर दूरि तिहारौ करिहै यहाँ विनोद ।
वो लिलई सव सखी सहेली ललिता आदि सब वाम ॥
खेलत ख्याल चली घर कौ तब संग लै श्यामा नाम ।
पहुंची आय धाम अपने तब कीरति लई बुलाई ॥
करत आरती लेत बलैयाँ आनन्द उर न शमाय ।
चन्दन चोवा अरु कस्तूरी केसरि सुगन्ध मिलाय ॥
लीपति भीति किशोरी श्यामा साँझी धरी वनाय ।
मगद मलाई मेवा सवुले और अचार मँगाय ॥
पूरी कचौरी लडुआ जलेबी ए सब भोग लगाय ।
नमस्कार करि आरती दियौ सवन परसाद ॥
मंगल गावत मोद पढ़ावत उपज्यौ मन अल्हाद ।
राधा श्याम पुनि करि व्यारू पौढ़े भरि आनन्द ॥
रंग महल में सव सुख कीन्हों किशोरी श्रीव्रजचन्द ।

❀ अथ विजैदशमी उत्सव के कीरतन ❀

राग नट तेतालौ—

आजि दशहरा कौं दिन नीकों ।
जुगल किशोर जवारे पहेरे माल बनाबत टीकौं ॥

करति विहारि कुंज सुख पुंजन विविधि मनोरथ हीको।
किशोरी दास निरखि ब्रजचन्द्र है भयो भावतो जीको ॥

राग कान्हरौ आड़ताल--

आजि दशहरा परम सुहायौ प्रात उठिकैं अभिंग करायौ।
जुग किशोर जवारे पहरत कुंकुंम तिलक ललाट बनायो ॥
बूँटीदार झरा चिकन को चीरा सोस सभार वनायो।
सूथन पायन कटि में फेटा भूषन सव अंग सोधों लगायो ॥
प्यारी को सिंगार अति भारी कापै जात है वरनि सुहायौ।
श्री ब्रजचन्द्र किशोरी कुंजन निसि सैंनत कीरति विजै मन भायो

❀ अथ रास आगम बंशी के कीरतन ❀

राग रामकली जलद तितालो—

आजि आछीगति वजै बसुरियारे।
व्रज मोहन कैं अधरन में सप्त सुरभर ॥
श्री ब्रजचन्द्र किशोरी रीझी नीकी तानन पर

राग पुरवी—

रंगीली बासुरी मन हर्यौरे।
कहा करो सुनि मेरी सजनी मोहनी मन्त्र कर्यौरे ॥
सास ननद डर निकसत न पइए यह दुख मोपै न जात भर्यौरे।
किशोरी दास व्रज चन्द्र विहारी कै पर बस प्रान पर्यौरे ॥

राग कल्यान रूपकताल—

बजाई मुरली मदन गुपाल।
श्रवन सुनत ही मोहनीरी लेत है चित चुराई ॥
श्री बृन्दाबन सरद जुन्हईया जमुना तट सुखदाई।
जहाँ रच्यौ रास सुघर संगीतन निरखित अनंग लुभाई ॥
उरति परप गति लेत परसपर ब्रजत्रिया नंद कन्हाई।
किशोरी दास ब्रजचन्द्र कै उतकै देखे रीति कै रतिजु बढ़ाई ॥

राग विहागरो आड़ताल—

ए सुनि वाजै बांसरी वन मैं।
नैंकु न मौंन गहै व्रजचन्द्र कैं घमरि रही अधरन मैं।।
कैसें धीर रहैं धुनि कानन ह्वै कै पैठे तन मैं ।
किशोरी दास एसी कोन तिय याहि सुनैं रहैं अपने पन मैं ।।

—०—

राग केदारो आड़ताल—

मधुर मधुर सुरबाजत बंशी वनवन आजुरी ।
परत श्रवन धाय तनक भनक आय छूटत जीय धीरज लाजरी ।।
मन व्रजचन्द्र ओरें जात चपरिकें दौरे वन तन नैंक कछु सुभवन काजरी । चलिये किशोरी तहाँ ठाड़े वनवारी जहाँ सुन्दर कुंवर व्रजराजरी ।।

राग कैदारो इकतालो—

बासरी वजाय कांन्ह तान मोहि सुनाय गयो ।
मैं ठाढी ही अपनी अटारी अंग छवि छल बताय गयो ।
अंग रंग भरे द्रिगई तमुरि कैं मुसकाय गयो ।
किशोरी दास तब ही तैं मो मन व्रजचन्द्र सँग लगाय गयो ।।

—::—

राग अड़ानों रूपक ताल—

तरनि तनइया कें तट मोहन ठाढे मुरली बजावै ।
लाग डाट सुर सप्त तालसों नव नव रंग उपजावै ।
गावत राग अडानौं नीकै अति ही मोहनी तान सुनावैं ।।
श्रीव्रजचन्द्र किशोरी व्रज त्रियनन चेटक चटक लगावै ।

राग मारू आड़ताल—

कन्हईया की बासुरी काम नगारि ।
कानन ह्वै प्रानन पै वैधत अति सुनत चढ़ै बिषभारी ।।
सुधि वुधि बिसरि जाय सब तन की टलागै वनवारी ।
किशोरी दास व्रजचन्द्र विना नेंक घर न रहै व्रजनारी ।।

राग कैदारो तिताको—

वाजत है मुरली सुनि सुनिरी ।
रंगभरीताननि रस भरी कांनन घुमड़ि रही धुनि धुनिरी ॥
मजहि धीर हरत निगोड़ी काम मन्त्र पढ्यौ पुनि पुनि री ।
किशोरी दास ब्रजचन्द्र अभरन लगि वोलत व्रज वधु चुन २ री ॥

❀ **अथ रास उत्सव के कीरतन, तत्र महारास लिख्यते** ❀

राग विहागरौ तितालौ—

एरी ए सरद रैंनि उजियारी कुसुमित वन सुखकारी ।
मोहन मुरली बजाई । श्रवन सुनत उठिधाई ॥

❀ छंद ❀

धाई श्रवन सुनत ब्रज वधू छांड़ि सब गृह काज ।
पय ओंटि जमावत वछ मिलावत पति सुत छांड़ि समाज ॥
उलटि पलटि भूषन सजे एक चक्षि काजर आँज ।
है आतुर ऊठि चली मिलन कुँवर व्रजराज ॥ १ ॥
एरी ए निरखि पीया रस सने जथा जोग भूषन वने ।
रुकी सदन एक वाम तन तजि मिली घनश्याम ॥

❀ छंद ❀

श्याम घन मुसिक्याय बोले भलैं आई भामिनी ।
राका सहित विराज नीकी यही सर्द की जामिनी ॥
नव चन्द्र चन्द्रिका विपिन रंजित सुभग जमुना सोहनी ।
गुरुजन कौं उर जिनि करौ नवल त्रिया मन मोहनी ॥ २ ॥
एरी ए रास रच्यौं बनवारी लीनी संग सकल ब्रजनारी ।
अद्भुत मण्डल कियौ । गानतान रसमय सुर लीयौ ॥

❀ छंद ❀

लियो रस में राग अति ही मधुर मधुर सुर सोहनौ ।
करत नृत्य विचित्र गति सौं मैंन मन कौ मोहनौ ॥

बाजत ताल पखाव किन्नर मंद मंद सुरसौं मिली ।
तत्थेई तत्थेई शब्द उचरें सकल भामिन रंगरली ।। ३ ।।
एरी ए रुचि बाढ़त व्रजबाला, कुंजन जाय दुरे नंदलाला ।
तिया ढूंढ़ि कृष्ण रंग भीनी, तब हरि कीसी लीला कीन्ही ।।

❀ छंद ❀

कीनी जु लीला तऊ न आये तब उठि पुनि ढूढ़न चली ।
बूझत वन द्रुम बेलि वसुधा इक इक ह्वै न्यारी अली ।।
चिन्ह देखे चरन के तब बुही मारगि गहि लियौ ।
बीच में एक तिया देखी ताहि पूछत भरि हियौ ।। ४ ।।
एरी ए वहुरि पुलिन में आई, सुमिर प्रिया गुन गाईं ।
आइ मिले तिहि काल, कर जोरे मदन गोपाल ।।

—०—

❀ छन्द ❀

गोपाल लालन जोरिकें कर कहत रोस न कीजिये ।
सुनिये तिया नव जोवनी मोहि आपनौ करि लीजिये ।।
हों तिहारो रिनी आली अरिनी न होंऊ कवै ।
सुनहु जुवती करूँ विनती कृपा दृष्टि कीजै अवै ।। ५ ।।
एरी ए चितई मृदु मुसिक्याय, मोहन लिये अंक भरि धाय ।
रस मण्डल रच्यौ भारी, राधे श्री व्रजचन्द्र विहारी ।।

❀ छन्द ❀

विहारी प्यारी सुढंग नाचैं तरनि तनया तीर ।
उरप तिरप सांगीत उघटें लेत तान गंभीर ।।
वैन अधरन किंकिनी गति नूपुरन कौतिक भयौ ।
मुकट लटकनि सिथिल वैनी निरखि मन मथ लजि गयौ ।। ६ ।।
एरी ए हाव भावनि कटाछैं, रसभरी रँगभरी सोहत आछे ।
श्रमकन वदन विराजैं, निरखत रतिपति लाजैं ।।

❋ छन्द ❋

लाजें जु रतिपति निरखि सोभा वृन्दागन प्रफुलित भयौ ।
थक्यो उडपति थकी जमुना व्यौम विमानन सौं छयौ ।।
भये थिरचर अचरभये थिर कुसुमनि वर्षा करी ।
किशोरी दास विलास अवसर निरखि अँखियाँ ना टरी ।। ७ ।।

राग विहागरौ आडतालौ—

श्री राधे जू निरखत सुभग सुहाई ।
मोहन कौं लिये संग नाचत गावत वैन बजावत आनन्द उर न समाई ।।
श्री बृन्दावन सुभग अस्थली जमुना तट सुखदाई ।
किशोरी दास व्रजचन्द तिहारी कौं सरद निसा मन भाई ।।

राग विहागरौ तेताला तथा केदारौ—

निरतत रास में बनवारी ।
संग वृषभान दुलारी राजत चहुं ओर ब्रजनारी ।।
बाँह जोरि मण्डली बनावत विच विच श्री ब्रज बिहारी ।
पुनि द्वै है न्यारे न्यारे नांचत रंग भरि भारी ।।
उरप तिरप गति लेत परस्पर राधे नवल बिहारी ।
अपनी अपनी चौपनि सौं लैं लटकि लटकि गति न्यारी ।।
नचत मोहन जब उघटै प्यारी उघटैं मोहन जब नांचत प्यारी ।
बाजत वीन पखावज वांसुरी मिलि नूपुर अनुसारी ।।
तान मान कल गान संगीतन रंग राख्यौ सकुमारी ।
प्रफुलित विपन सरद ससि पूरन वढ़ी रैन सुखकारी ।।
थिर चर के चरथिर भये कोटिकाम मनहीरा ।
वरनि न जाय सोभा ता छिन की किशोरी दास वलिहारी ।।

राग केदारौ तथा—

रास रच्यौ व्रजचद्र बिहारी ।
श्री वृन्दावन जमुना के तट सरद निसा उजियारी ।।

एक तें एक सखी सब सुन्दर सर्वोपर राधाप्यारी ।
वाँह जोरि मण्डली बनावत मनहु मैन फुलवारी ॥
उरप तिरप गति लेत परस्पर लटकनि की बलिहारी ।
किशोरी दास स्वामिनि तेहि औसर रंग राख्यौ अतिभारी ॥

राग केदारो चौतालौ—

एरी आजि सरद रैनि नीकी चंद चंद्रिका सुहाई ।
वृन्दावन जमुना पुलिन में जगिमगि रह्यौ अधिकाई ॥
श्री व्रजचन्द प्यारी निरतन हित लखि चरनन की कोमलताई ।
किशोरी दास सुधाकर मानौ अपनी चूरि के धूरि विछाई ॥

राग मैरू । आडताला—

निरतत मोहन राधा प्यारी ।
ताताथेई तातायेई ताताथेई ततथेइ उघटत शब्द सकल व्रज-नारी ॥ धूधूकट धूधूकट ध्रगतांग ध्रगतांग बाजत मृदंग सुधंगगति-न्यारी । बंशीवट जमुनातट विहरें किशोरी दास व्रजचन्द्र बिहारी

रागकाफी । इकतालौ—

सुगंध नाचै श्री वंशीवट के निकट ॥
श्री जमुना के तट उरप तिरप गतिलेत सुलफ अति ताथेई ताथेई-वोलैं उघटत सांगीत सुधवा देत ताल वलिताचैं ॥
मुरली नूपुर मृदंगवीना तार मधुर सुर वाजै गावत जील सैं व्रज-सुन्दरी एक तान सुर सांचै ।
गति में गति उपजावै किशोरी श्री व्रजचन्द्र बिहारी अरस परस-चौपनि सौं दोऊ उमगिउमगि रंगराचैं ॥

रागपरज । तितालौ—

विरची सघन निकुञ्ज रंगनि हो ।
जहाँ निरतत दोऊ रसपुञ्ज रंग रंगनि हो ॥
॥ दोहा नवल रंगीली राधिका नवल रंगीले लाल ।
नवल रँगीली जामिनी नव रच्यौ जुरास रसाल ॥

नवल रंगीली सहचरी सोभित हैं चहुंश्रोर ।
नवल रंगीली लेत गति प्यारी नवल किशोर ।।
चितवनि श्रति रस रंभ भरी इकटक तैं न टरैं ।
रीझि रीझि दोउ विवस हैं हँसि हँसि श्रंक भरैं ।।
मेलि ग्रीव भुज द्विरद गति लटकि लटकि रति हेत ।
दम्पति श्रति श्रानन्द सों चले सुभग संकेत ।
परम भामतो केलि करि विहरत भरि श्रानन्द ।।
रसिक श्रनन्तन देन सुख किशोरी श्री व्रजचन्द्र ।

—❀—

राम मालवौ । जलद तितालौ—

निरतत लाड़िली ब्रजचन्द्र सोहे जहाँ सर्द सर्वरी ।।
उरप तिरप गति लेंत लटकि लखि लज्जित काम गर्वरी ।
कोकिला कल कंठ ऊपर दामनी लह लहानि पै वारि डारौं लाखि-
कोटि श्रर्वरी ।। किशोरी दास पिय प्यारी छवि पै वलिहारी
तन मन दर्व्यरी ।

राग केदारौं । जलदि तेतालौ--

रंग रंगीली सरद सुहानि जगि मगि रही चाँदनी राति ।।
कुसिमित वृन्दाबन बहु भाति रंग गीलो बरसतित्ताल ।
बरसति गीलो ललित जहाँ नृतत राधिका व्रजचंन्द ।।
तत्तथेई थेई ताथेई वोलत व्रज ललना के वृन्द ।
चोप चटक सो लेत सरस श्रति ।।
न उतम न उतम लटकि लटकि गति ।
उरप तिरप लरिव रागिनी लज्जित सुलय भेद सो नूपुर वज्जत
चाल ।। वजत नुपुर श्ररु झनकत किकिन मुरली वरखत रंग ।।
तक ध्रुम कटि तक ध्रुम कटि वाजत मधुर मृदग ।
मृदुकल कठ जील सों गावत तान तरगीनि रंग उपजावत ।।
लाग डाट सुर भेद वताबत हाव भाव कटि भृकुटि नचाबत ।
भृकुटि नचावत करत कटाछैं उघटत शब्द सांगीत सारी ।।

गम प ध नी सा नी धा पा म ग रे सा प रे स प यह रीति ।
धनि धनि मंगलनिधि रजनी जहाँ राधा रंगराख्यौरी सजनी ॥
निरखि होत है अति रति लजनी यह सुख दुर्लभ है अज अजनी
। चाल । दुर्लभ अजसारद नारद शिव कमलादिक वंचित रहै ॥
बड़ भागनि ब्रज सुन्दरी सब किशोरी दास मुख लह ।

—०—

❀ अथ गोवर्द्धन समय के कीरतन ❀

राग कान्हरो आड ताल—

दीप दान आजि परम सुहायो
कुल्ह की रातिजानि नंदराय जू सब ब्रज जिवायो ।
नदीरानी जू आज्ञा दीनी जुबतीजन मिल मंगल गायो ॥
किशोरी दास बृजचन्द्र बिहारी जू के मन अति भायो ।

———

राग कन्हरो तथा—

आति कुहू की रात सुहावत ।
अपने सदन सकल बृज माहीं गोधन पर नन्द दीप जुआवत ॥
सोभा लागत अति से नीकी व्रजनारी मिलि मंगल गाबत ।
किशोरी दास व्रजचन्द्र गोप बलि सव गायन के कान बजावत ॥

राग कान्हरो तथा—

खिरक के द्वार खिलावत गाय ।
सनमुख आय कूख मारत हैं दोरत धोरी अति अकुलाय ॥
छूवत वस अरु गहै पीत पट हूंक कै आवत पूँछ उठाय ।
वलि व्रजचन्द्र धेनु खिलावत निरखि किशोर नन्द मुसिक्याय ॥

राग कान्हरो तथा—

खेलत चोपर पीतम प्यारी ।
अपनी जीत विचारत डारत पासें चोपन भारी ।
दाव लागो सो कहत न आवें जानत राधा रसिक विहारी ।
श्री व्रजचन्द्र खात रुग्रों तऊ जीती किशोरी व्रषभानु दुलारी ॥

राग कान्हरो तथा—

बैठे है हरी राधा मोहन ।
नाना विधि पकवान साजि ढिग चहुंदिस दीप दान अति सोहन ।।
वीरा सोधो धीर व्रज सुन्दरि मंगल गावत मुसकित मोहन ।
श्री व्रजचन्द्र बिहारी की छवि किशोरी दास ठाढे इकटक जोहन ।।

राग विलावल--

गिरधर पूजत श्री गिरराय ।
वलि नन्द सखा सकल व्रजवासी फूले उर न समाय ।।
प्रथमहि जल पय दधिसौ पुनि मानसी गंगा बलहि न्हवाय ।
चंदन चरचि उठाय पीतांवर कुसम हार पहराय ।।
धूप दीप करिकैं तवै लै कुंड वारो भोधराय ।
वीरा है अरु गाय खिलावत डोरा देत वधाय ।।
पाग जु पीरे छोर की दै ग्वालिन पीठ थपाय ।
श्री वृजचन्द्र गोवर्द्धन छवि किशोरी दास वलि जाय ।।

राग बिलावल तथा--

सावरे कर पर गिरवर धार्यो ।
महामस्त मघवाहतौ पायन सोतौ पार्यौ ।।
गोपी ग्वाल गैया बृजजन कौं सैल रूप ह्वै कैं प्रतिपार्यौ ।
श्री बृज चन्द्र किशोरी थापि नग मान इन्द्र कौ मार्यौ ।।

राग सारंग तथा—

सवै मिलि पूजौ गिरिराज ।
वड़ौ देवता या व्रज मांही सव देवन सिरताज ।
बहु विधि सौं तुम्हें हैं सुख दै मन वाञ्छित ह्वै हैं सब काज ।।
ताते रचि पकवान अरु करि नाना विधि के साज ।
दीजै वलि गिरिगोवर्द्धन कौं करि है कहा सुरराज ।।
किशोरी दास व्रजचन्द्र कहैं तुम सनहु वबा व्रजराज ।

राग सारंग तथा—

गोधन पूजन चले हैं कन्हाई ।
नन्द जसोमति अरु व्रजवासी फूले उर न समाई ॥
मानसी गंगा नीर दूधसौं मिलि अ्रसनान कराई ।
धूप दीप पकवान भारौ धरि पुनि माला पहराई ॥
चन्दन चरच दई मुख बीरी आगै मधुर खिलाई ।
किशोरी दास व्रजचन्द्र बिहारी निरखत नैन सिराई ॥

राग सरंग तितालौ—

आवौ सिमिटि सबै व्रजवासी लैं लैं गैयाँ अपनी संग ।
रहो गिरि की छैय्याँ सब सब सुख सौं नाचौ गावौ करहु बहु रंग
पर्वत को परभाव लखोगे तब ह्वै है मन माँहि उमंग ।
श्री व्रजचन्द्र किशोर कहैं नग मघुवा कौं मान करि है भंग ॥

राग सारंग तथा—

पूजा करि श्री गोवर्द्धन की अन्नकूट रचि नाना भाय ।
विविधि भाँति पकवान शाक अति खाटे खारे मधुरे लाय ॥
दूध दही घृत ओदन पूर्यौ तापर चक्र सुहाय ।
मुकवन के बेसन के अगनित तिलवरी पापर पनौ छनाय
वरा मगौरी और सब रोचिक अरु सामिग्री वरनी न जाय ।
तुलसी दल दै शंखोदक करि भोग धर्यौ है श्री व्रजराज ॥
श्री ब्रजचन्द्र अरोगत गिरि ह्वै निरखत ब्रज जन सब सुख पाय ।
किशोरी दास अचवन करवावत लै लै बीरी देत बनाय ॥
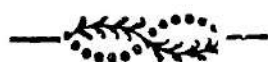
राग भैरू तथा विलावल तिताला—

चिर जीवौ लाला तिहारौ जसोमति ।
इन्द्र कोप ते राखि लई ब्रजव्रज जन कौं सुख दीनौ है अति ॥
सात द्यौस गिरिराज धर्यौ कर जानैं महा प्रलै वरस्या कति ।
किशोरी दास व्रजचन्द्र के पांयन आनि पर्यौ मति-हीनौ सुरपति

❀ अथ दीप मालिका की द्वैज के कीरतन ❀

राग कान्हरौ तितालौ--

आजि द्वयौज दिन वहनि सुभद्रा न्यौति वुलाये कुँवर कन्हाई ।
वहुविधि थार परोस धर्‌यौ लै जैंबत श्री व्रजचन्द्र वलिभाई ॥
अचवन करि दई है वीरी तिलक कियौ है ललाट वनाई ।
मंगल गावत आरति वारत किशोरी दास पुनि लेत वलाई ॥

—०—

राग सारंग तथा--

जिमावति वहिन नन्द के लालहिं ।
नाना विधि रचिपाक अरु विंजन आग धरै रसालहिं ॥
जैंवत हैं अति रुचि करि करिकै श्री व्रजचन्द्र परम कृपालहिं ।
किशोरी दास उतारि आरतौ वीरी दै तिलक बनावत भालहिं ॥

❀ अथ गोपाष्टमी उत्सव के कीरतन ❀

राग सारंग तितालौ—

आजि गोचारन कौ दिनु आयौ ।
फूली जसोदा अंग न समाति है लालकौं उवटि न्हवायौ ।
अग अंगौछि बसन भूषन सजि रोरी तिलक वनायो ॥
आरति वारि वलैया लीन्ही सुरभी चरन पठायौ ।
घर घर छाक लिये व्रज सुन्दरि विंजन सरस वनायौ ॥
दासी वृन्दावनि लेत जात हरि व्रजजुवतिन सुख पायौ ।

राग सारंग तथा—

कन्हैया चले चरावन गाय ।
वलि अरू सखा संग राजत हैं बने सब एक हि दाय ॥
माथे मुकुट कटि काछिनी काछे मुरली मधुर बजाय ।
लेत छाक मारग में निकसे सब ही के सुख दाय ॥
श्री वृन्दाबन जमुना के तट सुख सौं धैनु चराय ।
साँझ कौं टेरत हैं जु कदम्ब चढ़ि गोधन लेत बुलाय ॥

आये गोकुल गली साँकरी हाँकि हटकि सुख पाय।
निरखत व्रज की सुन्दरि सगरी चढ़ी अटारिन धाय॥
देखि कैं नन्द सुवन ऐ अपने तन मन में न सिराय।
यह विधि करत विनोद सुहाए मन्दिर अपने आय॥
करत आरति जसुमति मैया मुखकी लेत बलाय।
किशोरी दास ब्रजचन्द्र विहारी मुख की छवि निरखत न अघाय॥

—❀—

❀ अथ प्रवोधनी उत्सव कीरतन ❀

राग कान्हरौ आड़ताल—

आजि प्रवोधनी परम सुहाई।
जागे देव गोवर्द्धन धारी घर घर आनन्द होत बधाई॥
मंगल गावत चौक पुरावत बहुत ईख वर कुञ्ज बनाई।
चहुं दिशि दीपक मध्य सिंहासन तांपर गदी तकिया लाई॥
नऊतन झगा रुई की कुलही फैंटा सूथन मोजा सुहाई।
नख सिख लौं सिंगार वनाय कैं तहाँ आप प्रभु कौ पधराई॥
पञ्चामृत करि उत्थापन करि धूप दीप करि भोग धराई।
ऊपर गद्दर पहिराय रजाई धरी अंगीठी आगैं आई॥
च्यारि जाम जागे अनुरागे श्री व्रजचन्द राधा सुखदाई।
प्रातहि मंगल दरशन करिकें किशोरी दास तन मन हरखाई॥

❀ बसंत आगमन के कीरतन ❀

राग वहार तेतालौ—

बसंत रितु नीकी आई।
खेलौंगी अब ही ह्वै निधरक पिय सौंदै गरवाही॥
बोलत कोयिल गुंजत मधुकर वृन्दाबन कुसमित सुखदाई।
श्री व्रजचन्द्र किशोरी छैल मिलि तहाँ रितुराज मनाई॥

राग बसन्त तथा—

केसरि कटि श्याम तन शोभित बीच बीच चोवा लपटायौ।
मृग मद और अरगजा लैं लैं मौहन अंग छिरकायौ॥

राधा मोहन भरे अनुरागनि अद्‌भुत खेल मचायौ ।
पिचकारी भरि भरि रंगन सौं अवीर गुलाल उड़ायौ ।।
खेलत रंग बढ्यौ है परस्पर निरखत अनंग लुभायौ ।
किशोरी दास व्रजचन्द्र विहारी प्यारी छवि निरखत न अघायौ ।।

राग वसन्त तथा—

केसर छीटें विच चोवाकी बूंदें लागत है सुहा ।
श्यामा श्याम के श्री अङ्कनि में मनौ मोहनी अनंग लिखाइ ।।
कुसुमा कर रति कुसमित वन अति मधुप कोयल बोलत सरस.ई
किशोरी दास व्रजचद्र चंद्रलखि कोटि काम उपमा वल खाई ।

राग वसन्त तथा—

नित मोरे कुसमित वनराई ।।
गुंजत मधुप कोयलिया कुहुकत पवन दक्षिन तें आई ।
रजनी रंगभरी राजत है चंद्र चंद्रिका सुहाई ।।
राजत है रितुराज तहाँ रितु सवहिन कौ सुखदाई ।
नाचत मोर मयूरी के संग कुंज लता झुकि आई ।।
श्री व्रज चंद्र किशोरी तहाँ चलि कीजै मदन वधाई ।

राग वसन्त तथा—

खेलत नवल किशोर किशोरी सरस वसन्त सुहायौ ।।
नव नव सखी नवल छवि शोभित नवल ही खेल मचायौ ।
नवल अवीर गुलाल कुमकुमा केसर रंग छिरकायौ ।।
नवल करन पिचकारी छूटत नव चोवा लपटायौ ।
नवल ही बाजे बाजत नीके राग वसन्त जमायौ ।।
श्री व्रजचन्द्र लाड़िली नव छवि देखि किशोर लुभायौ ।

राग वसन्त तथा—

खेलत दोऊ रस भरे वृन्दावन में वसन्त ।।
छिरकत केसर भरत गुलालै लै चौवा मुख चरचंत ।
कुसमित वन कोयलिया कूजत भ्रमर गुंज लखि लखि कै हसन्त
। व्रजचन्द्र किशोरी निरखें मनमथ मन जुहरन्त ।।

राग हिंडोल चौतालौ—

सरस व न्त रसवन्त आयौ ।
नव नव पल्लव करि द्रु म शोभित कुसुम कलित वन छायौ ॥
अंमनि पै बोलति हैं कोइल गु जत मधुकर पु ज सुहायो ।
किशोरीदास व्रजचन्द्र बिहारी प्यारी मिलि रितुराज मनायौ ॥

राग हिंडोल तितालौ—

नव वधु बसन्त रितुदूती लिये आवै ।
नाना रंग कर कुसमित वल्ली विविध सुगंध संवारि सबै विधि-
रति रस रंगनि बढ़ावै ॥ भौंरे अंवनि गु जत मधुकर बोलत-
कोयल मृदु कल कंठनि विविध भांति करि रुचि उपजावै ।
किशोरी दास व्रजचन्द्र छवीली जहाँ रीझि रिझावन काजै-
सुन्दरि वनठन आली कुसुमाकर गुन प्रगटावै ॥

राग हिंडोला चौताला

आजवनी वृषभान नन्दिनी पहिरें सारी वसन्ती ।
विच बिच छींट फवी चोवा की वहुत नीकी लागत मनु मनमथ
मोहिवे की जंती ॥ चूनी जटित जराय के भूषन गोरे अङ्गनि-
सरस सोहन्ती । किशोरी दास व्रजचंन्द रीझि रहे अद्भुत छवि
यह लखि राधे रसवन्ती ॥

राग हिंडोल तथा—

सरस वसन्त आयौ सुहायौ भायौ व्रज जुवतिन के मनकों ।
पहरि वसन्ती सारी चुनि चुनि चौपनि जुरि मिलि चलीं वृन्दाबन
कों ॥ कनक कलस लै नूत मंजरी गावत राग हिंडोला दन्दन कौं
किशोरी दास मनमथ मोहत छविसौं छबीली मिली जाय व्रज
चन्दन कौं ।

❀ अथ होरी उत्सव कीरतन ❀

राग भैरु आड़तालौ—

हो हो होरी खेलन जैये ।
सुनरी आली नन्द नन्दन पिय रंग अबीर गुलाल भरैये ॥

पकरि कैं चोवा मुखलपटाई ए ऊपर सेरी विन्दु वनैये ।।
किशोरी दास ब्रजचन्द छैल कौं बहिया पकरि फिरि आँखि अँज
इये ।

राग बिभास तितालौ--

छैलवा कहा परयो तू लारैं ।।
केसर रंग पिचकारी सौं सेरी अगियाँ रंग डारें ।
दौर उठाय गुलाल घूँघरि में परसत तन रिजवोरें ।।
देख अकेली आय आप अरत हैं गिनत न साँज सवोरें ।
मन भायो करि छाड़त रसिया करत न नैंक बिचारैं ।।
किशोरी दास ब्रजचन्द्र बिहारी रिझ अपनो वोरें ।

राग बिभास तथा—

ग्वारन जोवन मधुभरी जोर ।
भरत गुलाल नाना रंग विध मारत छरी विहोर ।।
नैक न फाकत गावत गामरुआ कहि टेरें मुह मौर ।
बधत न काहू निसंक दौरि के पकरत नन्द किशोर ।।
नैन आज मुख माँड दै गुलचा बोलत कान मरोर ।
छैल नन्द के डीट लँगरवा कित जइयो चित चोर ।।
यहि बिध कहि फगुआ जो लीनों तासुक को नहीं आवे ओर ।
दीये श्री ब्रजचन्द्र किशोरी मनमथ सुख कर छोर ।।

राग विभास तथा—

कन्हीयाँ पकर कैं मुख माड़ौ ।
आजों काजर डारो गुलाल रंग गारिन से वहु भाड़ो ।।
छैल नन्द को डीट लँगरवा फिरत हुतो मद चाड़ो ।
होरी के ब्रजचन्द्र किशोरी भरुयां करके छाड़ों ।।

राग देशी तथा—

देखी जू चाँचरि देत श्री राधा मोहन चंग बजावें ।
हो हो हो हो हो करि वोलत नाचत गीत उपजावें ।।

गावत जात रसीली गारी चितवन में रस रंग वरषावैं।
निरखि किशोरी श्री व्रजचंन्द्र छवि मनमथ हैं रति वढ़ावें ॥

राग आसावरी आड़ताल—

ग्वारनि जोबन रँगराँचि खेलत होरी न हारें।
भरत गुलाल अभीर केशर रंग पिचकारी भरि डारें ॥
गारी गावत ही में तारी दै भरुआ भरुआ पुकारें।
आलो कीर फखालै करिमें दौर दौर के मारें।
वधत नकाहू मदन गरव भरी लोक लाज न विचारें ॥
किशोरी दास श्री व्रजचन्द्र रस वसि ह्वै गिनत न साज सवारें ॥

राग धनाश्री तितालौ—

रसिया लेलन को उमह्यौ हो।
हो हो हो कहि गावत गारी आवत निलज्ज भयो हो ॥
डारि गुलाल द्रगनि भाजै अरु जात न ढंग कह्यो हो।
छैल किशोर व्रजचन्द्र होरी के अव नहीं जात सह्यो हो ॥

राग धनाश्रीं आड़ताला—

ग्वारनि मधभरि बोलत क्यौं सतराय।
चली जात है जोवन माती सब काहू को मसराय ॥
सुसर की इत वगदि अमानी वरजत ही कहौ जाय।
वावा की सौं दई कहत हो आगे जिन धरि पाय ॥
कानि न काहू की फागुन में सुनिये हो चितलाय।
हम तुम मिलकें होरी खेलें अद्भुत रंग बढ़ाय ॥
यह सुनिकैं छवीली छवि सौं चितई मुरि मुसकाय।
भरि भरि जोरी अवीर गुलाल की रंग पिचकारी भराय ॥
लाघें कसि लै धरि हाथ में दौरी मोहन तन धाय।
पकरे जाय कुमरि नन्द नन्दन भरूआ कहे गरि गाय ॥
आखि आज मुख माड़ि दै विदा सखी भेस बनाय।
कहत हैं डीटो वहुरि देगें हमसो हो रसराय ॥
परि हो पाय हमारे रसिया वहुविधि हा हा खाय।

जब जो छाड़ें तो छाड़ें हैं करि हैं सब भाय ॥
बोली वोल वहुरि मारग में हमसो वोलन आय।
श्री व्रजचन्द्र रसिक मन रंजन दीजे फगुआ मगाय ॥
जो जो कह्यौ रसो सो ही सुखकापे कहौ जाय ।
कुंवरि कृपा दें दास किशोरी निरखत नैन अघाय ॥

राग धनाश्री आड़तलौ—

होरी के खिलार किन वधी वर जोरी ।
दुरि पाछे ह्वै आप अचानक वरवट वहीयाँ मरोरी ॥
उरि गुलाल दृगन में मेरे मुख लपटावत रोरी ।
भरि पिचकारी तकत उरोजन वोलत हो हो होरी ॥
करत न कान नैक काहू की निधरक ह्वै भकजोरी ।
किशोरी दास वृजचन्द्र फिरत तू कुल मरजादा तोरी ॥

राग सारंग तितालौ—

देखत अनोखे हो खिलवार ।
निसदिन रहत होरी रंग रोच्यौ वजवत डफ रिजवार ॥
अवीर गुलाल भरै जोरी में गावत फिरे लगवार ।
हो हो कहि कहि उधम पारत आये सदन पिछवार ॥
भयो कहा भये वृज के चन्द्र हो तुम गाय चरावन हार ।
कुँवरि किशोरी भलो नहीं डीठ्यो अधिकी नन्द कुमार ॥

राग सांरग तथा—

अधिको गोकुल गौत खिलार ।
तामें मोहन रसिया अति ही दौरी रँग रिझावर ॥
लै लरिका संग खेलत डोलत गिनत न सांज सवार ।
देखि अकेली आय गहत है घूँघट देत उघारि ॥
भरि भरि रँग गुलाल हैं डारै परी कपोल छतियाँ निहार ।
जो कहूं बोलत नक रोस करि तव वहु कारे मनुहारि ॥
उठि जु चलत पकरत वहीयाँ लपटत भरि अवार ।
मेरो मन ललिव जात हैं निरखे नंदकुमार ॥

दैहौं यह जस सिर फगुन कैं कीयौ यह निरधार।
मिलिये श्री व्रजचन्द्र किशोरी सास ननद उर डार॥

राग सारंग तितालौं—

रंग रंगीली अतिहि रसीली हो हो भली होरी।
झुरमट नाचत ग्वाल ग्वालनी मोहन जू राधा गोरी॥
बिच विच गारी गाय रंग भरैं डारत अवीर गुलाल भरि झोरी।
रचे फाग अनुराग भरे मिलि चांचरि दे ब्रजचन्द्र किशोरी।

राग काफी आड़ताल—

निकसि कुवरि खेलन चली वै रंग हो हो होरी।
श्री वृषभान ललीं रंगनि रंग हो हो होरी॥
लै संग ब्रज की वाल। इक बै रूप अरु रंग में सनी॥ रं०
कञ्चुकी रंग अपार। लहंगा घूमनिहार॥ रं०
नव सत साजि सिंगार। घुहरैं कुसम निहार॥ रं०
वजैं चंग मृदंग करताल। भरि झोरिन अवीर गुलाल॥ रं०
करन कनक पिचकारीं। गावत रंग भरी गारी॥ रं०
केसर कलस भराय। सब खेलन सौंज बनाय॥ रं०
नन्द कुंवर के हेत। आई वट संकेत॥ रं०
सुनि निकसे नन्दलाल। ले संग रंगीले ग्वाल॥ रं०
नटवर वेस बनाय। तेसेई सखा सुहाय॥ रं०
अवीर गुलाल भरी झोरी। सौंधे भरी कमोरी॥ रं०
ढफ मुरली मुहचंग। बाजत गरजि मृदंग॥ रं०
लै कर केसर भरी पिचकारी। चले देत किलकारी॥ रं०
गावत झूमक चेत। पहुँचे आय संकेत॥ र०
जुरे आय दोउ टोल। वोलत मद भरे वोल॥ रं०
चली पिचकारिन धार। पुनि कमलन की मार॥ रं०
अबीर गुलाल उड़ाय। दिनकर गयौ छिपांय॥ रं०
उमगि उमगि रंग भरैं। मन के मनोरथ करैं॥ रं०

उमग्यौ प्रेम अपार । काउ न रही संम्हार ।। रं०
लखी जोर व्रज नारी । भजे ग्वाल गिरिधारी ।। रं०
पाछे लागे व्रज तिय । पकरन मोहन प्रिय ।। रं०
गह्यौ पीताम्वर लटकि । सोऊ तजि गये सटकि ।। रं०
दुरे जाय घनश्याम । घेरि लिये तब वाम ।। रं०
आँख आँजि गुलचाय । जुवती रूप बनाय ।। रं०
नख सिख सजे सिंगार । लज्जित कोटिक मार ।। रं०
आवत नैकु न लाज । देखैं तन कौं साज ।। रं०
गिरिधर आप कहाय । अब रहे आंख अँजाय ।। रं०
सखा संग के कहाँ गये । अब हमरे वस भये ।। रं०
जसोमति अरु नन्दराय । अपनी भीर बुलाय ।। रं०
कै अव हा हा करौ । प्यारी राधा के पाय परों ।। रं०
फगुआ देहु मँगाय । छाड़िहिं नाच नचाय ।। रं०
दुरे गहे बलिराम । सुबल सुवाहु श्रीदाम ।। रं०
सखा बेस बलि करे । उन सखा बंधे सब उरे ।। रं०
यह देखिकें श्याम सुजान । वोले जोरि के पानि ।। रं०
मन भायौ फगुआ लेहु । विदा हमारी देहु ।। रं०
फगुआ दियौ मगाय । जैसौ जाहि सुहाय ।। रं०
होरी खेलत रस रह्यौ । कापै जात कह्यौ ।। रं०
ब्रह्मा सिव मुनि देखि । नन्द कुंवर कौ भेख ।। रं०
ध्यान धरत हम चाहिं । ध्यानहु आवत नाहिं ।। रं०
सो व्रजवनितनि आगें । कर जोरैं आज्ञा मागैं ।। रं०
धन्य धन्य व्रजगोपी । सदा कृष्ण रंग ओपी ।। रं०
धन्य धन्य ब्रज भूमि । धन्य लता रही भूमि ।। रं०
हम क्यों न भये व्रजवासी । यौं कहि भरत उसासी ।। रं०
रमा आदि सुर नारि । कहैं क्यों न भईं व्रज नारि ।। रं०
रंग भरे श्री व्रजचन्द पीय । वसौ किशोरी दास के हिय ।। रं०

—※—

राग काफी तिताला—

होरी खेलन रसिया आनें।
फैंटा मीस काछनी काछैं फैट गुलाल भरानें ।।
कर लीयें ढफ अरु गावत गारी अंग अंग रंग रचानें।
किशोरी दास ब्रजचन्द्र विहारी मैं तब ही है पहँचानें ।।

राग काफी तिताला—

होरी खेलन लड़ैती रसिया ललित त्रिभंगी।
देखैं ही वनि आवे सजनी वानिक नव नव रंगी ।।
खेल मच्यौ नव नबल निकुञ्जनि निरखि भयी मति पंगी।
किशोरी दास ब्रजचन्द्र पियारी पै वारौं कोटि अनंगी ।।

—०—

राग काफी तथा—

एरी तेरौ रूप छवीलौ सोहै री।
रमा उमा सी दासी दीसत अरु उपमा कौं कोहै री ।।
सुन्दरता की रासि रसिकनी निरख ही मन मोहै री।
निकसे हू जिन भूलि के गृहतैं तोहि वावा की सौं है री ।।
गोकुल के रसिया अब अति ही फिरत नचावत भौंहैं री।
पुनि यह फागुन मास री सजनी लखि पावै कोऊ तोहै री ।।
छोडै नाहिं संग कहूं तेरौ कोटि करौ किन छोहैं री।
भरी पिचकारी डारि गुलाल है वोलै बै हो हो होरी।
तेरौ हूं मन ललचि जायगौ श्री व्रजचंद के जोहैं री ।।
किशोरी दास तजि लोक लाज सभी फिरै वाहिके गौंहैरी।

—०—

राग काफी जलद तेतालौ—

सुनि सुनि ढफ की हुंकार लडैती प्यारी रे।
चली चतुर आतुर है अति होलै संग व्रज की गोरी रे ।।
अबीर गुलाल भरे झोरिन में करन कनक पिचकारी रे।
पहुंची जाय तहाँ मन मोहन गावत रंग भरी गारी रे ।।

भरत रंगिनि रग गिरिधर है राधे गिरिधारी रे ।
खेल मच्यौ ब्रजचद्र किशोरी रंग रह्यो अति गारी रे ॥

आड़ ताल—

होरी आईरी रंग रंगीली छवीली मन भाई ।
नव पल्लव कुसमित वृन्दाबन मधुप गुंज सुखदाई ॥
वाजन लगे ढफ और मुरली वोलन कोकिल लगत सुहाई ।
श्री ब्रजचन्द्र किशोरी मन वांछित व्रज पर फाग घुमाई ॥

तेतालौ—

देखौ व्रज के लोग नवल रसिया ।
डफ लिये फिरत गावत वन वीथिन तारी देत रहे हँसिया ॥
चाचरि देत करत कोलाहल ब्रज जुवतिन सों मिलि रसिया ।
किशोरी दास व्रजचद्र राधे कौ यह सुख नित्त हीय वसिया ॥

राग चेती गौरी तितालौ –

होरी खेल ही भरि अनुराग ।
एक ओर लैं संग सखियन राधा कीरति वाल ॥
एक ओर कुंवर व्रजराज कौ संग सखा सव ग्वाल ।
उत महुअरि डफ वाजैं वसुरी इत मिली गारी गांइ ॥
उत पिचकारी इत नैन कटाक्षैं चलत जु रंग बरसाई ।
भरत अबीर गुलाल परसपर केसर भरि भरि डारि ॥
हो हो हो हो हो कहि बोलत मची है कमलनि मारि ।
खेल होत ही दुरि पाछे ते हरै हरें व्रज बाल ॥
जाय कैं पकरे अतिकर छल सौं रसिया मदन गोपाल ।
वैनी गूथि मोंग जु संबारी आंजी आखि वनाया ॥
सौंधै भीनी कञ्चुकी लँहगा सारी सुख पहिराय ।
पकरि वाँह स्यामां ढिग ल्याई बोली मधुरे वैन ॥
सुघर सखी है नन्द गाँव की मिलौ अंक भरि ऐन ।
यह सुनि कैं मन हरसि कै हुलसि मिली उर लिपटाय ॥
जब जान्यौ निज भेद लाल कौ सकुची कछु मुसिकाय ।

मन में मोद लजित नैननि में करन लगी हंसि बात
चतुर कहाय कै क्यों वस भये छल छैल नालजात ।
फागुन में भये फिरत अमाने अंग अंग भरि मैन ॥
क्यों अंजियाये ये अनियारे प्यारे वड़ेड़े नैन ।
सखा संग के कहां गये सब बलि जू सहित भजाय ॥
भरि बोलिये नन्द यसोदा नातन परि यें पाय ।
हा हा खाऔ फगुआ देकै मन भायो जु मंगाय ॥
छांड़ेगी तव श्री व्रज चन्द जू रस अनंग जु लुटाय ।
जो जो कह्यौ कह्यौ सो मोहन कहा लौं कहूं संकेत ॥
निरखि किशोर किशोरी शोभा होत है मदन अचेत ।

पूरया—

हो हो या खेलन दै स्याम सुन्दर संग मेरी वीर ॥
डफ मुरली ऊधम सुनि सुनि कै काहू रहत न धीर ।
जान दीजियौ फाग जस लीजोयौ पहचानियौ जु पीर ॥
किशोरी श्री व्रज चन्द्र संग खेलौंगी जमुना तीर ।

राग भोपाली रुपक ताला—

मो मन भाईरी रंगीली होरी भाग सुहागनि आई ॥
उघरि उघरि खेलोंगी पिय संग भरि भरि मुख सौं धौ लपटाई ।
मन के मनोरथ करि हों सबरे मिलि व्रजचन्द्र चतुर सुखदाई ॥
किशोरी दास उड़ाय गुलाल अबीर घूंघटि में रहों कंठ लपटाई ।

राग छयानट जलद तैतालौ—

होरी खेलन की अति चित चौंप ॥
उघरि कहा करैगी सयानप उलही जी कौंप ।
भागन फागुन पायौरी सजनी पुजवन मन कौ होय ॥
उमगि मिलौ व्रजचन्द्र किशोरी लोक लाज सब धोय ।

राग सोरठि तथा—

छल सांवरे सँग खेलन होरी जैहों सब उर डार ।
रह्यौ न जाय लाड़िले बिन छिन फीकै लगत घर वार

दै जस फागुन के सिर सगरौ मिलि हैं नन्द कुमार ।
श्री व्रजचन्द्र किशोर रसिया सौं लगि गयौ मन रिझवार ॥

राग खमावची—

अरी ए हाँ री खेलन केहि मिस जाऊँ ।
सासु ननद और पार परौसिनि करैंगी सबै चवाऊँ ॥
वाजत डफ मुरली छला को सुनि सुनि के अकुलाऊँ ।
बहुरि नन्द कौ वोलत मरुआ लै लै मेरौ नाऊँ ॥
उत मोहन इत गुर्जन डर पर्‌यौ कठिन कुदाऊँ ।
मिलिये श्री व्रजचँद किशोरी करिये सोई उपाऊँ ॥

राग खमावची—

रंग रंगीलौ मोहन नागर रंग रंगीली गोरी ।
रंग भरी होरी खेलत परस्पर भरि भरि रंग कमोरी ॥
मुख माड़त प्यारी व्रजचन्द कौ चोवा चन्दन रोरी ॥
किशोरी दास चहुँ दिसि व्रज सुन्दरि बोलत हो हो होरी ।

राग खमावची—

कहा खेलि जाने हो मोहन नव नव रंगी हो हो होरी ॥
डारि गुलाल दृगनि अंग रंग भरे करत फिरत वर जोरी ।
गारी दै पिचकारी तानै दोरि लगवत है मुख रोरी ॥
श्री व्रजचंन्द किशोरी छैलवा रसियाने सब कानि तोरी ।

राग अडानों तथा—

चाचर है रंग राखै गोरी ॥
उरप तिरप गति लेत सुलफ अति चितवनि में लै चितचोरी ।
गावत गारी चंग वजै संग वोलत हो हो हो हो होरी ॥
श्री व्रजचंन्द किशोर रंग भरि भरि लपटावत मुख पर रीय ।

राग नाय की—

सजनवा काहू सौं न डरै हो ॥
निधरक आय कै पकरत वहिंया गुलाल भरै हो ।
छैला कै रसिया होरी कौ नेंक न काहू की कानि करै हो ॥

हो हो हो कहि छतियाँ भाँल गावत फिरि फिरि अंक भरै हो।
मानत नाहिन लोक लाज कहूं लंगर अपनी अरनि अरै हो॥
किशोरी श्री व्रजचन्द्र कहा तू ढीठ्यौ देत फिरै हौ।

राग नायकी—

श्री राधे चाचरि रंग रचावै॥
हो हो बोलत मोहन रसिया मोर मंख है उड़ावै।
बाजत मुरली ढफ घन घोरत निलजी गारी मुख करि गाव॥
किशोरी श्री व्रजचन्द्रबिहारी छवि निरखत अनंग लजावै।

राग नायकी इकतालौ—

होरी खेलन कुंज में आये॥
अबीर गुलाल दोऊन पर राजत अंग अंग रंग रचाये।
कर पर कर अरु नैन अरुनता जंभावत हैं आरस वहु छाये॥
पौढ़ै श्री व्रजचन्द्र किशरी रति रस वस लपटाये।

राग वि॰ावल तेतालौ—

आजु होरी कहाँ करी जू रजनी सजनी संग प्यारे॥
अंग अंग रंग रचाय भले ही आये प्रात हमारे।
दृग अनुराग गुलाल भरे ए अदभुत अरुन तिहारे॥
किशोरी दास छैल छबि ऊपर कोटिक मनमथ वारे।

राग काफी—

एरी अरीए होरी धूम परै है॥
अप अपनी चौपनि नर नारी उमगि उमगि रंग सरस भरैं है।
गावत गारी आंजत अंजन पिय सौं नाहि डरैं है॥
किशोरी दास व्रचचन्द्र विहारी मिलि फागुन आजु सुफल करै है।

राग सोरठि जलद तेतालौ—

एरी वरसाने आजि होरी मचि रही॥
वाजत मड़ुअरि ढफ वीना वैन कठताल रंग रंग भीनी गोरी सब-
नाँचि रही। रँगीली श्री राधा प्यारी रंगीलौ श्री व्रजचन्द्र तैसेई

रंगी चाचरि रचि रही ॥ बिविधि फाग की नवल किशोरी-
मिलि वरन वरन सौं जस बसींचि रही ।

राग बिहागरौ आड़ताला—

ए बनि आयोरी आनि छैल होरी कौ ॥
मल्ल काछ काछै री सजनी फटा सीस मरोरी कौ ।
अदाभरी आड़ि उपरैनी बैंदा भाल गुलाल कोरी कौ ॥
कशोरी दास ब्रजचद्र विहारी है रसिया गोरी कौ ।

———

राग ईमन इकतालौ—

एरी होरी के तुमरी छैल अनौखे उमड़ि आवत खेलन कौ कर वर
जोरी । आप निसंक ऊंक भरि भामिन नैंन नचाय नचावत भौंहैंनि
बोलत है हो हो हो होरी ॥ जोवन फैल भर्यौ अँग अंगनि
रंगनि गावति है बृज गोरी । किशोरी दास ब्रजचन्द्र दीसिहै
लंगराई अवमति जाने हमहूं कौं कछु भोरी ॥

———

राग ईमन ख्याल—

रंग होरियाँ ।
रंग भरी छवि भरी छवीली खेल रंग रंगीलौ रंग बसत है
सरसत है जहाँ । तैसीय रंगीली चाचरि मचि रही रही रंगीली
महदी न हाँ । रंगीली भार्मरि भरनि मैनपुर वजै झननननननन
नन तहाँ । रंगीलौ जु रसिया ब्रजचन्द्र किशोरी रीझि भाजि रहे
सो उपमा वरनन कौं मति कहाँ ॥

———

राग झझौंटी तितालौ—

अनौखी होरी खेलैंरी नन्द लाल ।
सखियाँ की अखियाँ भरि भरि फिर उड़त अबीर गुलाल ॥
ना घूँघरि में मेरे सजनी अ नि होत उर माल ।
किशोरी दास कैसे जाय कह्यौ अरु कीन्हें व्रजचन्द्र ऐसे हाल ॥

राग काफी तितालौ—

यौ रंग भीनै होरी खेलौ होरी खेलौ ।

केसर छिरकि गुलाल चरिचि थारी बिविधि सुगन्धनि लै लै रेलौं

जब प्यारी तुम्हें भरै प्यारे जोरि पानि सब रिसि पर झेलौ ।

किशोरी दास ब्रजचन्द्र विहारी अरु सब चतुराई लौ ॥

राग काफी जलद तेतालौ—

मिलि वर्षाने की गोरी मन मोहनां श्याम गारीं गावत नवल किशोरी ॥ मन०

तुम सुनौ नन्द के नन्दा । पूछति तुमकौ व्रजचन्दा ॥ मन०

गोरे नन्द जसोदा मैया । तुम कारे कौन ते दैया ॥ मन०

छिपि छल सौं जसोदा रानी । काहूं कारे के संग सानी ॥ मन०

अब जसोमति कौ गहि आनै । मिलवै आय बृषभानै ॥ मन०

तेरी वहिन छैल छन्द गारी । करैं श्रीदामा सौं यारी ॥ मन०

वर वर ऐसी तेरी दादी । सोतौ सदा फिरै उनमादी ॥ मन०

है पाटल तेरी नानी । सोतौ आन पुरुष सौ जानी ॥ मन०

नन्द नन्दन तेरी भूवा । वह करै झूठ के पूवा ॥ मन०

सव नन्दगांव की वाला । ये वरषाने के ग्वाला ॥ मन०

गठजोरौ आनि करावौ । हथरेवौ सवै जुरावौ ॥ मन०

हम देखि देखि मुख पावैं । ब्याह की गारी सुनावै ॥ मन०

यह लगन सुछन आयौं । पाँड़े कौ पूछि सुधायौ ॥ मन०

दिन आठ फागुन के नीके । अति मोद बढ़ावन जी के ॥ मन०

पट ओट दिये राधा प्यारी । हँसै कुँवरि सुनि गारी ॥ मन०

रस सिन्धु वह्यौ तिहि वारी । सो ना जानत कुन्ज विहारी ॥म०

सुनि गारी रीझि नन्द लाला । दई सबनि मनि माला ॥ मन०

यह रहस किशोरी दास गावै । व्रज वास बधाई पावैं ॥ मन०

छैल हो अब सहज ही होरी राच्यौ नन्द कुमार ।

सगरे औटपाय भरे सजनी संग होरी हुरिहार ॥

गावत ख्याल उघौरे नितही आय मेरे पिछवार ।
तकत फिरत अकेली मोकौं गिनत न साँझ सवार ॥
क्यौं करि बचिहों या फागुन में लग्यौं लंगर लगवार ।
किशोरी दास व्रजचन्द्र विहारी मेरे भयौ चाहत उरहार ॥

❀ अथ रंग डोल के उत्सव के कीरतन ❀

राग सारंग—

झूलत डोल भरे अनुरागनि जमुना तीर कदम्ब की छाईं ।
कुसमित बन राजत अति सुन्दर बोलत कोइल मधुर सुहाई ॥
खेलत जात फाग रस रंजित अरस परस चौंपनि अधिकाइ ।
श्री व्रजचन्द्र किशोरी छवि पर कोटि कोटि लखि अनंग लुभाई ॥

❀ अथ श्री रामनौमी उत्सव कीरतन ❀

राग टोड़ी तथा—

नोबति बाजत अति ही सुहाई ।
चैत मास उजियारी नौमी आज भलैं ही आई ॥
दशरथ सदन प्रगट भये हैं रघुपति राजकुमार ।
महामहोत्सव अवधि घर घर गावत मंगल चार ॥
रानी कौशल्या कूखि सुलछिनी भाग सुहाग भरी ।
धनि दिन धनि यह लगन महूरत धनि धनि पहर घरी ॥
फूले सुसर कौसल पुरवासी भगतन फूलि भई ।
दास प्रभु के प्रगट होत ही सब दुख विपति गई ॥

राग सारंग चौतालौ—

धन्य कूखि कौशल्या रानी प्रगट भये हैं सुन्दर रघुवर ।
मधुर मधुमास सन्ध्या नौमी सुफल कर्क लगन सुभ पुनर्वसु नछतर ॥
उमड़ि उमड़ि चहुँदिसिते वर्षन आनन्द मंगल अवधि घर घर ।
दास किशोरी हेत वहु सम्पति तेहि औसर दशरथ राजेंदर ॥

❀ अथ फूल बनावा फुलवाड़ो के कीरतन ❀

राग सारंग तितालौ—

फूलन की रावटी सुखद वर ।
गोख झरोखा जरी तिवारी फूल ही के गुमट वने अरु फूल ही के कलसा वा पर ॥
फूलने छज्जे चहुँदिसि फूलन के जु कटहरा मनोहर ।
जहाँ बैठे व्रजचन्द्र विहारी प्यारी फूलन ही के भूषन मोहत फूलनि छाति वनीं अति सुन्दर ॥
फूलन ही झूमक फूलन ही की सज्जा रची विचित्र कर ।
किशोरी दास पिय प्यारी की छवि फूल भरी रस रंग भरी नित वसौ मो मन में जु निरन्तर ॥

राग सारंग तथा—

फूल डोल झूलत हैं पिय प्यारी ।
फूलन के आभूषन अंग अंग फूलन रची है तिवारी ॥
फूली सखी झुलावति छवि सों पहरि केसरी सारी ।
किशोरी द.स फूली उर राधा श्री व्रजचन्द्र विहारी ॥

राग सारंग तथा—

फूल डोल झूलत पिय प्यारी ।
फूल झंगा पगिया अँगिया और फूलन सारी संवारी ॥
फूलन के आभूषन सोधत फूलन रची चहुंदिसि फुलवारी ।
फूले लखि व्रजचन्द्र लड़ैती किशोरी दास बलिहारी ॥

राग सोरठि आड़ताला—

सोभा देखन की यह बिरियां ।
मंगल रैनि रग भरी अरु सुहाग की घरियाँ ॥
जमुना माझ कमोदिन फूली फैली चन्द उजारी ।
राजत तहाँ विचित्र नऊका कुसुमन सेज सबारी ॥
सीतल मन्द सुगन्ध पवन सुख सौं आवै मन्द मन्द ।
जल गुलाव के छूटत फुहारे जहाँ पौढ़ी प्यारी व्रजचन्द्र ॥

उरझे बाहु मृडाल परसपर मनमथ के सुख लूटें ।
किशोरी दास टूटत उर माला कंचुकी के बंध छूटें ॥

राग सारंग तथा—

बैठे लाल फूलन के चौवारैं ॥
विचविच जारी संवारी रचि गुहि गुहि कुसुम निवारैं।
फूलन कौ जु कटहरा आगैं फूलन कीलूँमछ जातर सारैं ॥
किशोरी दास व्रजचन्द्र छवि लखि लखि वेर वेर वलिहारैं ।

❀ अथ अखै त्रितिया चन्दन जात्रा उत्सव के पद ❀

राग सारंग तथा—

लाल पिया खसखानें बैठे चन्दन कौ लेप कियैं ॥
शीतल मन्द सुगन्ध पवन वहै मनहु सुख कौ समूह लियैं ।
सारंग राग अलापैं सखी जहाँ तन मन भेद हियहैं ॥
किशोरी दास ब्रजचन्द्र बिहारी तहाँ यह सुख देखि जियैं।

राग सारंग तथा—

सघन कुंज में उसीरावटी जमुना तट सुखदाई॥
फूले कमल भ्रमर गुंजत है कोयल कुहुक सुहाई ।
सीतल मन्द सुगंध पवन जहाँ छुटत फुहारे अति अधिकाई ॥
श्री अंगलेप किये चन्दन कौ जल गुलाव केसर लपटाई ।
तहाँ राजत व्रजचन्द्र लाड़िली रस भरे रति सुखदाई ॥
गावत सारंग राग अली मिलि किशोरी दास मन भाई ।

राग मधुवाद चौतालौ—

एरी अंग अरगजा लगाय कै बैठे उसीर सदन सीतल अति-
सुखद पिय प्यारी ॥
सघन लता झुकि झूमि रही जहाँ त्रिविध पवन हिमाचल परसि-
आवैं अति ही सुख सरसावैं तन मन नैंन सिरावैं राते पति रुचि-
उपजावत भारी ।
छिरक चहुँओर नीर गुलाल पवन दुरावत सखी जन मिलि-

कमल दल सेज सवाँरो । छुटत फुहारे जाहि देखि आवै कम्पन-
किशोरी दास ग्रीषम यह विधि विचरत व्रजचन्द्र बिहारी ।

राग सरंग तेतालौ—

देखौरी वृषभान नन्दनी और नन्द कौ नन्दन ॥
जमुना उतीर सीर कुंज में अंग लगावैं चन्दन ।
फूलि फूलि झूमि रहे सघन लता बेलि छूटत फुहारे आगें ग्रीषम-
कन्दन ॥ किशोरी दास व्रजचन्द्र विहारी प्यारी छिरकि गुलाल
सखी गावत सारँग छन्दनि ।

राग सारंग चौतालौ

एरी सुहामनौ लागत है खसखानौ ॥
जमुना तीर सघन द्रुम छैंया त्रिविधि पवन सुख सरसानौं ।
फूले कमल भ्रमर गुंजय है छूटत फुहारे जहाँ अति सरदानौं ॥
तहाँ राजत ब्रजचन्द्र बिहारी प्यारी किशोरी दास छवि लखि-
रति पति मन अरुझानौ ।

राग सादत सारगं तितोलो—

नन्द को नन्दन सुन्दर मृगनयनी ॥
अति शीतल कदम्ब तर बैठे मृदुवर पँक लसैनी ।
बोलत कोकिल मधुर मधुर महा शीतल मन्द सुगन्ध समीर जहाँ
जमुना निकट दैनी । सूखे समर श्रम जान व्रजचन्द्र किशोरी कौं-
पवन ढुरावें खोल पीत उपरैनी ॥

❀ अथ नृसिंह जू के जन्म के कीरतन ❀

राग पूर्वी--

प्रगटे श्री नृसिंह अवतार ।
माधव मास चतुर्दशी शुल्का सांयकाल शुभवार ॥
प्रल्हाद जन की रक्षा कीनी हिरनाकुश उर डार्यौ नसन बिदार
दास भक्त उधारि आपनों कियों दुष्ट संहार ।

❀ अथ स्नान जात्रा उत्सव कीरतन ❀

राग विभास तितालौ—

मंगल जेष्ठ जेष्ठा पूनौं उजियारी ।
करन स्नान लाड़ली के संग श्री ब्रजचन्द्र विहारी ॥
विविध सुगन्धित श्री यमुना जल उबटि न्हवावत ले ब्रजनारी ।
तरनि तरईया तरुनी मिलकै करत केलि पिय प्यारी ॥
आस पास जुवती मधि दम्पति मनहुँ मैन फुलवारी ।
किशोरी दास अति अद्भुत यह छवि इक टक रहे निहारी ॥

❀ अथ रथ जात्रा उत्सव कीरतन ❀

राग सारंग तितालो—

देखो सखी दम्पति कौं रथ बन्यौ ।
रतनन जटित विविध चटकीलो और सुगन्धनि सन्यौ ॥
हयकें जीन जराऊ जोहैं हिय में हार हमेल ठन्यौं ।
जहां बैठे ब्रजचन्द्र किशोरी आगे जरतारी वितान तन्यौ ॥

❀ अथ लाड़लो जी पधरानि दिवसि को बधाई के कीरंतन ❀

राग विभास—

कार्तिक शुक्ल पक्ष की पून्यौं आई मंगलकारी ।
आनन्द निधि व्रषभानु नन्दनी सेवक सदन पधारी ॥
होत बधाई ब्रजपुर घर घर मंगल गावत नारी ।
कहीं न जात तिहि सुख की सोभा किशोरी दास वलिहारी ॥
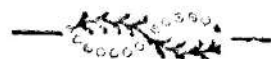
(जन्म बधाइ) राग अडानौ चौतालो—

रसिकन की जीवनि जाई है वृषभान राय जू की रानी ।
राधा अद्भुत नाम रसीलो जाहि पोंहोचत नहिं निगम की बानी
कही न जाइ देखै वनि आवै आजु बरसानै को रजधानी ॥
किशोरीदास की जीवन प्रकटी बात बनी मन मानी ।

राग परज—

ढ़ाढ़िनि नंदीसुर ते आई ॥
अपने पति को संग लिये है अति आतुर उठि धाई ।
उदौ देखि वृज वल्लभ कुल कौ फूली अंग न समाई ॥
नाचत गावत प्रमुदित ह्वै ह्वै टोरी अर्जास सुनाइ ।
रतन भान रतनन की पहुँची डाढ़ी हाथ गहाई ॥
उदै भान सोने को तोडर देत बहुत सकुचाई ।
महारानी कीरति आदर दै भीतर भवन बुलाई ॥
कंचन मनि भूषन पाटंवर नख सिख लौ पहिराई ।
दीय धनन के अगणित ललिता भान जू लुटाई ॥
कंज भानु और अष्टभान जु वौहोत विधि मन की आस पुजाई ।
किशोरी दास को बाह पकरि कैं वरसानैं जु बसाई ॥
रानी मागनो हों आयौ ।
कीरति जू की कुवरि राधिका ताकौ सदिका पायौ ॥टेक॥
पुरुष जाति बहुदान मान दे इन तन नेंक न हेरौं ।
वेसरि वलय महा मनि मंडित इनकौ अलपन फेरौं ॥
राज सिंहासन हेम अरु हाथी लेउँन नरकर ओटि ।
आँगिया डड़िया लहगा सुदरी इनकौ मेरें कोटि ॥१॥
महाराज व्रजराज नंद वृषभान बड़े अति दाता ।
सुवल सुबाहु श्री दामा अर्जुन कृष्ण तोक बल भ्राता ॥
इनको दत्त कवहुँ न लैहौं गोधन धन जो अपार. ।
रानी दियौ सवैं कछु लैहौं दुलरी मुकतन हारा ॥२॥
वरेयसी श्री वृजराज की माता सुख सागर की करनी ।
श्री वृषभान नृपति की जननी सुखदा सब सुख ढ़रनी ॥
पटुला श्री जसुमति की मैया मुखरा कीरति जननी ।
रोहिनी श्री बलराम प्रगट भये बड़ भागिनि गननी ॥ ३
रमा आदि दै और तियनि पै हों कवहूं नहि जाचौं ।
व्रजवनिता जाचक अभिमानी ह्वै निसंक हौं नाचौं ॥

सखी सहेली और सहचरी इनके गुण हौं सांचौं ।
जिनकी कीरति कुवरि पियारी तिनके दानहि राचौं ॥ ४
वरसानें वृषभान गोप कैं कीरतिदा सुभ नारी ।
ताकी कूषि मुकटमनि राधा वंदत चरन बिहारी ॥
जोग जप तीरथ ब्रत संजम इनकौ नैंकु न साधौं ।
दुर्ल्लभ सुलभ वास वृन्दावन राधा पद आराधौं ॥ ५
वरस गाँठि दिन जनम बधाई श्री राधा की होई ।
सदिका दियौ वृन्दावन रानी और न जाचौ कोई ॥
आदर करिके निकट बुलायौ मन में इछा सोई ।
रानी मगा अनन्य जानिकैं कृपा दृष्टि वर जोई । ६
ललित विसाखा चंपक चित्रा इनही के गुण गैहौं ।
इंदुलेखा तुंगविद्या रंगदेवी सुदेबी आदि सुख पैहौ ॥
वडी दान पूरन बृंदा जू इनते सब सुख लैहौं ।
यह परिकर वृषभान लली कौ ताकौं माथौ नैहौं ॥ ७
संग्रह करौं न जाचौं कबहूं तुव पद धन निज पाऊं ।
सीस नाय कें दीनन भाषौं ललित लली गुण गाऊं ॥
यह व्रत कों तुमहीं निबाहौ और कछू नहि आसा ।
दीजै कछु इक टहल आपनी रास बिलास निवासा ॥ ८
हौं अति पामर कृपा दृष्टि व्रज और कछू नहीं जानी ।
बृंदा विपिन वास देहे रानी निभयै करि मन मानी ॥
किशोरी दास कै नाम धरे को लाज राखो वडदानी ।
ब्रज वनिता तजि और न जाचौं हौं जाचक अभिमानी ॥ ९
वरसानौं गिरवर सुखद तिहिं ढिग वास अवास ।
कंचन मय रचना रुचिर गोपुर ग्रह सुख रासि ॥१
रमा उमा सब आदि दै टहल करैं नित्त आय ।
कोटि कोटि वैकुंठ हू तिहिं सम कहे न जाय ॥ २
सुच्छासन अरु सुहृदे इक नाम दुहुनि मन आनि ।
महाराज वृषभान की प्रगट अथाई जानि ॥ ३

अब बंसावलि भान की कहों कछूक विस्तार ।
मन उद्देस जु दीरका ताकौ अर्थ विचार ॥ ४
सूर्ज वंस में प्रगटियौ सोमवंश सुखसार ।
तिन राजनि कौं वरनतें होत बहुत विस्तार ॥५
जासौं मेरौ काज है ताकौं वरनौं वंस ।
जाके वरनत सक्र करैं देव आदि परसंस ॥ ६
महाराज भए नीपजू जग में तिनकी आन ।
तिनके नृप भए जू पजू सवको राखत मान ॥ ७
नृप दयाधि तिनके भए दया दीन सौं लीन ।
धर्म धीर तिनके भए कछु संतति करि हीन । ८
कठिन तपस्या तिन करी तेरह वर्ष प्रमान ।
गोवर्द्धन परवत विषें सिव दीनौं वरदान ॥ ६
भुव भूषन तिनके भए राजा श्री महीभान ।
सुखदा पतिनी जासु की तासु कूषि बृषभान ॥ १०
मही भान दादै कौ नाम । सुखदा दादी अति अभिराम ॥
श्री बृषभान उदार गभीर । पिता राधिका अति कुलधीर ॥
कीरतिदा माता विख्यात । कहत रतल गभी सुखदाति ॥
नाना इंदु नाम हैं जाकौ । मुखरा रानी कहियति ताकौ ॥
वडौ भैया श्री दामा नाम । अति सुकुवार परम अभिराम ॥
भादौं अष्टिमी तिथि उजियारी । नक्षत्र विसाखा रुचिर महारी ॥
जा दिन जनम लियौ श्री राधा । कीरति वेद पुराण अगाधा ॥
शुभ नक्षत्र गुरुवार है आई । अरुनोदय प्रगटी सुखदाई ।
घर घर महा महोछौ होहि । नर नारिन कैं आनन्द जोहि ॥
घर घर तोरन वंदन वार । मंगल गावति व्रज की नारि ॥
पंच शब्द बाजें नीसान । राखत सवकी हू कौ मान ॥
गयौ वधौवा नंद की पौसि । सब नंदीसुर आयौ दौरि ॥
जसुमति नंद वधाई लाए । श्री बृषभान अजिर में आए ॥
मिलत परस्पर आनंद वाढ्यौ । सौ सुख हम पर परत न काढ्यौ ॥

नाचत नंद और बृषभान । जसुमति वारति अपने प्रान ॥
पहलें बोल किये हैं सारे । आजु विधाता पूरे पारे ।
दुहूं सजन मन आनद भावै । किशोरी दास यह मंगल गावै ॥

---

* अथ व्रजनिधि जी कृत सनेह संग्राम लिख्यते *

राधे वैठी अटरिया भांकत खोलि किवार ।
मनौं मदन गढ़तें चली ह्वै गोली इकसार ॥
ह्वै गोली इकसार आंनि आँखिन में लागी ।
छेदत तन मन प्राँन कान्ह की सुदि बुधि भागी ॥
वृजनिधि है वेहाल विरह वाधा सुदाधे ।
मंदमंद मुसकाय सुधा सौं सींचत राधे ॥ १
राधे चंचल चखन के कसि कसि मारत बांन ।
लागत मोहन हगन में छेदत तन मन प्राँन ॥
छेदत तन मन प्रांँन कान्ह घायल ज्यौ घूमें ।
तऊ चोट कौ चाव घाव सौं घावही तूं में ॥
सुभट सिरोमनि धरि धीर वृजनिधि कौं लाधे ।
याही तें निसि द्यौस करत कमनैती राधे ॥ २
राधे घूघट वोट सौं चितई नैंक निहारि ।
मनौ मदन करतें चली गुप्तो की तरवारि ॥
गुप्ती की तरवारि डारि घायल करि डार्‌यौ ।
बृजनिधि ह्वै वेहाल परयौं नैनन का मार्‌यौ ॥
उठत कराहि कराहि कंठ गद गद सुर राधे ।
आधे आधे बोल कहत मुख राधे राधे ॥ ३
राधे घूघट दूरि करि मुरिकैं रही निहारि ।
मानौं निकसी म्याँनते सीरोही तरबारि ॥
सीरोही तरवारि वार व्रजनिधि पें कीन्हौं ।
मुसकनि मल मल गाय घाव सावत करि दीन्हौं ॥
फिरि फिरि करि करि मार सार करि फिरि फिरि राधे ।
टरत न अपनी टेक करत अद्‌भुत गति राधे ॥ ४

राधे निपट निशंक ह्वै चितै रही करि चाव।
मांनौं कांम कटार ले कियो कान्ह पर घाव॥
कियो कान्ह पर घाव पाव ठहरन नहि पाये।
गिरे भूमि पर भूमि प्रांन आंखिन मैं आये॥
टौनां टांम न मंत्र जंत्र सब साधन साधे।
बृजनिधि को वेहाल करत डरपत नहिं राधे॥५
राधे दृग वरुनिन की करद चलाई चाहि।
लागी बृजनिधि के हिये रहे कराहि कराहि॥
रहे कराहि कराहि लगी टुक आहि आहि रट।
वढी अटपटी पीर धीर तजि घूमि रह्यो घट॥
मुखसौं कढ़त न वैंन नैंन हू उघरत आधे।
असे असे काम करन लागी अब राधे॥६
भौहें वाकी वांकसी लखी कुंज की ओट।
समर सस्त्र विछुवा लग्यौ लालन लोटहिं पोट॥
लालन लोटहि पोट चोट जव्वर उर लागी।
कीयो हियों हुसार पीर प्रानन मैं पागी॥
बृजनिधि वांके वीर खेत में परे अगौहैं।
तहाँ घाव पर घाव करत राधे की भौहें॥७
चाली मृदु मुसकाय कै भानु नन्दिनी भोर।
मनौ तमचा मदन कौ लाग्यौ मोहन ओर॥
लाग्यौ मोहन ओर सोर कर नैंनहि पाये।
तन मन भये समार प्रांन आंखिन में आंये॥
भूले सुधि वुधि ज्ञान ध्यान सौ लागी ताली।
व्रजनिधि कौ यह हाल देखिवेऊ नहि चाली॥८
ठने जासे नैंनान सौ कीयो राधिका वार।
अक वक ह्वै जकि थकि रहे बृजनिधि नन्दकुमार॥
बृजनिधि नन्दकुमार मार सहिवे में गाढ़े।
इत उत कित हूं न जात रहत रूख सनमुख ठाड़े॥

हीयो भयो हुसार करेजारे ज रेजा
तौऊ चित में चाह लगै नैन के नेजा ।। ६
बांकी भौह गिलोल सौं छुटे गिलोला नैन ।
बृजनिधि मद गजराज के छूटि गये सब फैन ।।
छूटि गये सब फैन सीस धुनिवे लाग्यौ ।
बध्यौं ठांन में आय पाय डगबेडी पाग्यौ ।।
अब नहि छूट्यों जात घात ऐसी इह घांकी ।
कहियै कहाँ बनाय बात राधे की बांकी ।। १०
राधे सूधे द्रगन सों चितई करि अभिमांन
निकस्यौ मनों कबानतें नावक के से बांन ।।
नावक के से बाँन में नरवर साँन सुधारे ।
अंजन विस में बोरि किये टुक और दुधारे ।।
बृजनिधि पिय हिय पार भये उर उरझे आधे ।
नैनन के नटसाल रंग सौं राखत राधे ।। ११
खंजर से नैनान की निपट अनौखी नौक ।
कहा जिरह बकतर कहाँ कहाँ ढाल की रोक ।।
कहां ढाल की रोक झोक है दून की बांकी ।
लगी कान्ह के प्रांन स्यांन भूले सब घांकी ।।
वार बार के वार भयो अति जर जर पंजर ।
बृजनिधि कौ यह सूल फूल से लागत खंजर ।। १२
राधे गावत सखिन में ऊंचे सुर सौं तान ।
गख रह्यौ गहक्यौ गरौ मांनौ कुहक्यौ बांन ।।
मांनौ कुहक्यौ बांन कान्ह सुधि स्याप भूले ।
कांपन लग्यौ शरीर नीर सौ नैना झूले ।।
लगी एक रट आहि चाह दारू सों दाधे ।
ब्रजनिधि सौं करि हेत खेत में राखत राधे ।।१३
राधे पहरत कंचकी उघरे उरज उदार ।
बृजनिधि प्रीतम पें मनौं कीन्हों गुरज प्रहार ।।

कीन्हौं गुर्ज प्रहार मार तन मन में छायौ।
भरे नीर सौं नैन वोलत बहकायौ ॥
पर्यौ भूमि में घूंमि भूमि द्रग खोलत आधे।
करि करि रस में रोस मसोसन मारत राधे ॥
राधे नृत्यही करत है सब सखियन लें संग।
व्यूह रच्यौ मानौं मदन करन कान्ह सों जंग ॥
करत कान्ह सौं जंग बांन तांनन के चाले।
हाव भाव की तेक तुजक के खंज निकाले ॥
नेजा नन सुमार पार ह्वै निकसत आधे।
नित प्रतिहित की रारि करत बृजनिधि सौ राधे ॥ १५
राधे बृजनिधि मीत पै हित के हाथन टूठि।
पखुरी खोलि गुलाव की डारत भरि भरि मूठि ॥
डारत भरि भरि मूठि छूटि छररों ज्यौ लागत।
सवही अंग अनंग पीर प्रानन में पागत ॥
विसरि गयो चित चैंन मैंनहू उघरत आधे।
प्रीतम की गति देखि हरत घूघट करि राधे ॥ १६
राधे निरखत चांदनी पहरि चादनी बस्तु।
वदन चन्द की चांदनी चतुरानन कौ अस्तु ॥
चतुरानन कौ अस्तु सस्त्र यह मैंन चलायौ।
बृज छाके वाके वीर हथ्थ नथ्थन भरिजु द्रग दोऊ ॥
करि करि दाव घाव छिनहू नाँहि छूटे।
यह सनेह संग्राम सुनत चित होत विदेही ॥
पता पते की वात जानिहैं सुघर सनेही ॥
संवत अष्टादस सतक वावंन्ना सुभवर्ष।
सुखद जेठ सुदी सप्तमी सनिवासर जुत हर्ष ॥
सनिवासर जुत हर्ष लग्न ग्रह सांनुकूल सव।
बृजनिधि श्री गोविंद चंद के चरनन सौढव ॥
जयपुर नगर मुकांम चन्द्रमहलहि अवलंबत।
भयो सुग्रन्थ प्रतच्छ स्वच्छता पाई संवत् ॥ २१
इति श्रीमन्महाराजाधिराजराजराजेन्द्रश्रीसवाईप्रतापसिंहजी
देवविरचितं स्नेहसंग्राम सम्पूर्णम् ॥

व्रजभाषा में प्रकाशित प्राचीन पुस्तकें—